मगही एकांकी

भारत में नाटक के बहुत समय के बाद एकांकी साहित्य के परचलन होयल हल। एकांकी साहित्य के विसय विद्वान लोगिन के मत हे कि पच्छिमी सभ्यता के कारन एकर परचार–परसार अप्पन देस में भेल। हालाँकि नाटक के इतिहास तो हमरा ही पुराना हे लेकिन एकांकी के विकास 1930 ई० से मानल जा हे।

मगही एकांको के इतिहास के बात जब सुरू होवऽ हे तऽ कहल जा सकऽ हे कि हिन्दी एकांकी के साथे ही मगही एकांकी के विकास भेल हे। एकर विकास के जड़ी लोकनाट्य में मिलऽ हे। कुछ नामी लोक नाट्य जैसे–'बगुली', 'जाट–जाटिन', 'डोमकच', 'झिझिया', 'केवटी', 'गोरस', 'विखझरी' 'रेहुआ' आदि में देखल जा सकऽ हे।

आज मगही एकांकी अकेला न हे। एकर विकास साहित्य के सब्भे विधा के साथे हो रहल हे। मगही एकांकी में मगही मट्टी के महक आ लोक रुचि के कारन एकर माँग बढ़ रहल हे।

मगही एकांकी—विकास काल
(1945 ई० से 1973 ई० तक)

बीसवीं सताब्दी के मध्य जब मगही भासा के रचनात्मक आन्दोलन सुरू भेल तऽ ओकर साथे–साथे मगही एकांकी भी अप्पन पहचान बनावे लगल। इस्कूल, कॉलेज में जब मगही सिच्छा के पढ़ाई होवे लगल तब मगही एकांकी के मंचन, मनोरंजन, समाजिक सिच्छा के परचार-परसार के माध्यम बनल। एकर मंचन में असानी से अभिव्यक्ति परदर्सित करे के कला के कारन ही एकर जनम भेल। हिन्दी भासा के तरह ही मगही भासा पर समाजिक, राजनीतिक आन्दोलन, समाजिक विसंगति के भी असर पड़ल।

मगही एकांकी के जागरन काल के एकांकीकार में डॉ० श्रीकान्त शास्त्री के नाम बड़ी गर्व के साथ लेवल जा सकऽ हे। इनकर एकांकी में 'नया गाँव' के झाँकी' (मगही नवम्बर 1965 ई०) 'माटी–पानी' (बिहान 1964 ई०) आ 'मेहिमिसर' के बड़ी परमुखता से नाम लेवल जा राकऽ हे। ई सब एकांकी में समाजिक समसामयिक विसंगती के उठावल गेल हे।

1955 ई० में मगही पतरिका 'मगही' में 'कलक्टर साहेब के चपरासी' छपल। श्री शंभुनाथ जायसवाल के ध्वनिरूपक 'चलनी दुसलक बढ़नी के (मगही जनवरी

1955 ई० में) परकासित भेल। 1956 ई० में 'मगही' अगस्त अंक में श्री मुन्नी प्रसाद के 'कुबेर के भण्डार ओकील के पखाना तक' परकासित भेल हल। 1962 में प्रो० रामनन्दन लिखल एकांकी 'खैनी' के मंचन हरीन्द्र विद्यार्थी मसौढ़ी, प्रखंड के नूरा उच्च विद्यालय में कइलन। ई नाटक में कुरीति पर कड़ा परहार भेल हे। डॉ० रामनंदन के 'खैनी प्रहसन' (1958), 'लफंदर भगत' 'अतिथि', 'तिलक के करार' जनप्रिय एकांकी हल। ई सब एकांकी में हास्य आ व्यंग के निमन संयोग हल। प्रो० वीरेन्द्र प्रसाद सिंह विप्लव आ ऋषि कुमार के एक-एक एकांकी मिलऽ हे। अन्य एकांकी में मध्यम वर्ग के जीवन के समस्या के उकेरल गेल हे। ओहे घरी छपल एकांकी 'शत्रुघ्न राजीपुरी के माय' आ 'सुनैना' के नाम भुलावल न जा सकऽ हे। 1966 ई० में मुरली मनोहर सिंह के 'तार के सगुन' के परकासन विहान पत्रिका में होयल हल। एही पत्रिका में डॉ० ब्रजकिशोर पाठक के 'करजा न चुकल' 1972 ई० में छपल।

समृद्धि काल—(सन 1973 ई० से 2008 ई० तक)

समृद्धि काल के प्रथम चरन में मुरली मनोहर के आधा दर्जन एकांकी के परकासन विहान पतरिका में होयल। 1973 ई० में 'घेराव', 1974 में 'गेस्ट', आ 'समाजवाद आ कट्रोल' के परकासन बिहान पतरिका में होयल हल। 'लेहू के सेनुर' 1978 ई० में छपल। एकरा में अंधविस्वास भस्टाचार आ अभाव से जूझित अदमी के बड़ मार्मिक ढंग से प्रस्तुत करल गेल हे। प्रेमलता गिरि के 'सोहाग लउट गेल' आउ सिद्धेश्वर चौधरी के 'बलाउज जर गेल' समृद्धि काल के प्रथम चरन के चर्चित एकांकी हल। प्रो० तृप्ति नारायण शर्मा के एकांकी 'उकटा-पुरान' में विष्णु-लक्ष्मी के बतकुच्चन आउ 'महादेव के नाथ' में शिव-पार्वती के नोंक-झोंक हे।

1977 ई० के समय तारकेश्वर भारती के एकांकी नाटक 'जुलमाना', 1977 में 'श्रमण डगर पर', 1978 में 'इनक्लाब जिन्दाबाद', 1979 में मासिक 'विहान' आ 'मगही समाज' गया में परकासित भेल। ई सब एकांकी व्याप्त अराजकता आउ भ्रस्टाचार के साथे मजदूर के ऊपर सोसन के बिरोध करऽ हे। 1980 ई० में 'नयनन के जल से पग धोये' माँजर में परकासित भेल। एही समय कमलेश मिश्र के 'काहे नऽ' आ बालेश्वर सिंह के 'सेवा में मेवा हे' गीतिनाट्य के रूप में छपल। 1978 ई०में मिथिलेश शर्मा एकांकी 'अप्पन के' परकासन करैलन। डॉ० राम नरेश मिश्र हंस के 'सुजाता' एक सुन्दर एकांकी हे जे डॉ० राम प्रसाद सिंह के संपादन में 'एकारसी' में संग्रहित हे।

समृद्धिकाल के दूसर चरन में मगही एकांकी जादे लिखल गेल। रामाधार सिंह आधार के लिखल एकांकी 'क्रान्ति के कारन' आउ 'विद्रोही वेयार' 1984 में

परकासित भेल। ई दुन्नो एकांकी में एतिहासिक धरातल पर अत्याचार आउ सोसन के विरोध के स्वर सुनाई देवऽ हे। रामेश्वर मंडल के 'सिच्छक' दायित्व आ नैतिकता पर बल देवऽ हे। डॉ० भरत सिंह के 'मन के मुराद' 1984 में नारी समस्या पर उठाक्ल गेल एकांकी हे। शिव कुमार वर्मा के 'तड़पइत नारी' में नारी के कराह सुनाई परऽ हे, जेकरा में नारी के परताड़ना आउ विधवा विवाह के समस्या के उठावल गेल हे।

मगही एकांकी के इतिहास में बरिस 1985 सबसे महत्वपूर्ण हे। अब तक एकांकी के परकासन छिटपुट रूप में होइत रहल हल लेकिन किताब के रूप में एकांकी संग्रह 1985 में परकासित भेल। ''डॉ० राम प्रसाद के संपादन में परकासित एकांकी संगरह 'एकारसी' मगही के पहिला एकांकी संकलन हे। एकरा में ग्यारह एकांकी संग्रहित हे। बरनन करल गेल सब्भे एकांकी जथार्थ के रंग में रंगल सामाजिक परिवेस के साथ राजनीतिक परिवेस समुज्वलित करऽहे।'' ई संगरह में नाटकीय कथावस्तु के साथे आज के आम अदमी के समस्या के प्रस्तूतीकरन करइत एकर पात्र बहुत जीवंत दिखाई पड़ऽ हे।

केशव प्रसाद वर्मा कृत 'सोना के सीता' एकांकी संग्रह 1985 ई० में परकासित भेल हे। श्री वर्मा के पाँच एकांकी छपल हे एकरा में 'सोना के सीता' 'निषादकन्या', 'एगो आउ शान्तनु', 'सुजाता के खीर' आउ 'प्रियदर्शी अशोक' संग्रहित हे।

ई सब एकांकी पौरानिक कथा पर अधारित होवे के बाद भी मन के छुलेवे वाला संवाद, सरल भासा सैली आउ समाज के मन-मंदिर में बस जायेवाला मंचेन योग्यता होवे के चलते काफी आकर्सित कैलक हे।

घमंडी राम के 'सोहाग के भीख' नामक एकांकी 1985 ई में छपल। ऊ एकांकी में समाज में व्याप्त राजनीतिक, आर्थिक, संस्कृतिक आउ समाजिक विसंगति के उजागर कर्ल गेलहे।

डॉ० राम प्रसाद सिंह के एकांकी 'अकबर के कसमसाहट' में अकबर के भीतर उठे वाला अर्न्तद्वन्द के बड़ा ही मनोवैग्यानिक ढंग से चितरन भेल हे।

प्रो० राम नरेश प्रसाद वर्मा के 'नया समाज' में समाजिक जागरन के झलक मिलऽ हे। प्रो० वर्मा के एकांकी संगरह 1995 ई० में परकासित भेल जेकरा में 'जात–पात पूछे नहीं कोई', 'कबिरा खड़ा बजार में', 'गौतम', 'च्यवन' आ 'इंसानियत बाकी हे' काफी लोकप्रिय हे। समाजिक जीवन के जथार्थ अभिव्यक्ति सरल आ सहज ढंग से भेल हे।

मगही के दूसर एकांकीकार रामविलास 'रजकण' के 'परिच्छा', अलखदेव प्रसाद अचल के 'आज के इतिहास', 'ऊ जमाना गेलवऽ' आउ 'इंसाफ', सिद्धनाथ मिश्र के 'राही' आ 'दीयना', प्रो० दशई सिंह के 'च्यवनाश्रम', प्रो० जयनाथ कवि के 'मगध समराट जरासंध', जनक नंदन प्र० सिंह 'जनक' के 'बीरता के सम्मान' आउ डॉ० बज मोहन पाण्डेय 'नलिन' के 'अभिसाप' उल्लेखनीय हे।

ई सब एकांकीकार के बाद भी रमेश नील कमल के 'छिटकल किरीन', द्वारिका प्रसाद के 'फिजूल के काम', शेखर व्यथित के 'रास्ता पार', गिरीन्द्र प्रसाद के 'खुसी के लोर', गजानन के 'जोग', हरिश्चंद्र प्रियदर्शी के व्यंग्य प्रधान एकांकी 'चिमोकन', जितेन्द्र सहाय के 'जउन दिन बड़की दुलहिन घरे आयल', कृष्ण मुरारी मिश्र के 'ई मेहरी हम्मर हे,' 'अगुआ लउट गेल' परकास में आयल। ई सब समाजिक जीवन के व्यक्त करित एकांकी हे।'

गया से परकासित पतरिका 'कचनार' में डॉ० कृष्ण देव मिश्र 'बाबू के पापा' में समाज में आर्थिक संकट आउ दहेज के समस्या के रखलन हे। 1993 में 'मगही एकांकी सरिता' प्रो० अभिमन्यु प्रसाद मौर्य आउ प्रो० सुखित वर्मा के संपादन में छपल। जेकरा में आठ एकांकी संगरह हे। ई एकांकी संगरह में सम्प्रदायिक एकता, नसाखोरी, भ्रस्टाचार आउ नैतिक ह्रास के दर्सन होवऽ हे।

मगही एकांकी–नाटक के छेत्तर में अभिमन्यु प्रसाद मौर्य विसेस रूप से नाटक लिखे ला जानल जा हथ। इनकर एकांकी संकलन सतरंग 1998 में मौर्य प्रकाशन जक्कनपुर पटना से परकासित भेल हे। ई संगरह में 'पटना के अदमी', 'दरोगा डन्डा सिंह', 'शम्बुक बध', 'स्वामी जी' आ 'कबीर के इंसाफ' हे। एकरा में अंध विस्वास आ भस्टाचार पर करारा परहार हे।

रंग कर्मी बासुदेव प्रसाद के एकांकी संगरह 'आँख के पट्टी खुल गेल' काफी लोकप्रिय एकांकी संगरह हे। ई संगरह में कुल पंदरह एकांकी के संकलन हे जे इनकर मौलिक आ मंचित रचना हे। इनकर बिसेसता हे कि ई खुदे रंगकर्मी हथ आउ अप्पन लिखल एकांकी गॉव–गाँव सहर–सहर मंचित करित चलऽ हथ। इनकर एकांकी पर्यावरन, पाखंड आउ कुत्सित समाज के पोल खोलऽ हे।

राम विनय सिंह 'विनय' के एकांकी 'मास्टर साहेब', 'बकरी पर लेख' हे। उनकर, 'अँगना न घेरायत' एगो परिवारिक एकांकी हे जेकरा में भाई के आपसी प्रेम के देखावल गेल हे। डॉ० दिलीप कुमार के 'दावा' आउ 'डॉ० कंस' एकांकी समाजिक, रजनीतिक आउ भ्रून हत्या पर अधारित एकांकी हे। जे आज समाज में घटित घटना के उजागर करऽ हे।

अछूत भानु के एकांकी संग्रह 'पचखा' काफी लोकप्रिय रहल हे। बीरेन्द्र कुमार भारद्वाज के एकांकी 'गीरइत भीत्ती' भी काफी चर्चित हे।

आजकल **रेडियो नाटक** के प्रसारण भी होवे लगल हे जेकरा से नाटक–एकांकी रचना के क्षेत्र में क्रान्ति आ गेल हे। हमेसा कोई न कोई मगही एकांकी पटना आकासवाणी से परसारित होइत रहऽ हे। रेडियो नाटक में शत्रुघ्न राजीपुरी के 'भरल कोठी धान', सतीश कुमार मिश्र के 'चभक्का सिंह', 'बिजली सिंह' काफी लोकप्रिय भेल।

मगही एकांकी में श्री गोपाल निर्दोष के एकांकी 'औकात', वीणा मिश्रा के 'रखिहऽ सेनुरवा के लाज' चर्चित एकांकी हे। डॉ० सत्येन्द्र कुमार सिंह सुमन के केवल तीन गो एकांकी अब तक परकासित भेल हे। एकर नाम हे—'सीता स्वयंबर, 'अशोक के सस्त्र तेयाग' आउ 'कुणाल के आँख'।

नुक्कड़ नाटक

एकरा में जनता से सीधा संवाद कायम हो हे। अभिनयकर्त्ता के कोई बिसेस भेस-भूसा न रहे।

हरीन्द्र विद्यार्थी रचित 'घड़ियाल के आँसू', 'दौलत', 'किराया के मकान', 'पर्यावरन', 'एटमी डील' जहाँ यथार्थपरक नाटक हे हुएँ 'डूबल भइँसिया पानी में' व्यंग परधान नाटक हे। 'कुर्सी', 'आधा आबादी', 'चुनाव' नुक्कड़ नाटक हे। 'रुपसी-गाथा' गीति-नाट्य हे तऽ 'अन्हरिया' कविता-नाट्य है। 'दुल्हा बिकऽहे' दहेज प्रथा आउ 'दलदल' एकांकी एड्स के समस्या उजागर करऽहे। हुएँ नाटक 'कोसी कोप कथा' में कोसी के कहर हे।

ई तरह हम देखऽ ही कि मगही नाटक, एकांकी आउ नुक्कड़ नाटक भी खूब लिखा रहल हे। एकरा देख के लगऽ हे कि एकर भविस्य उज्ज्वल हे।

मगही कहानी

मगही कहानी—मगही भासा में कहानी के बारे में सबसे पहिले अप्पन घर में दादा–दादी, नाना–नानी के खिस्सा से पता चलऽ हे। ई खिस्सा जवान होय इया लइका सबके बढ़िया मनोरंजन करऽ हे। एकरा से सब लोग ग्यान आ परेरना ले हथ। मगही कहानी के इतिहास तो बहुत पुराना हे जे लोग के कंठ में बसल हे। चाहे ऊ लोक कथा के रूप में होय इया लोक गाथा के रूप में।

आज साहित्य में कहानी विधा एगो जीवंत विधा हे। ई गद्य साहित्य के एगो परमुख अंग मानल गेल हे। आज संसार के हर विधा में छपल इया बिना छप्पल साहित्य के पुरान रूप हमेसा देखल जा सकऽ हे। ई विधा आज एतना परिचलित हो गेल हे कि एकर विकास तरह-तरह रूप में सामने आयल हे। जेकरा चलते एकर कोई निस्चित परिभासा न देल जा सके। लेकिन फिर भी कहल जा सकऽ हे कि कहानी वास्तविक जीवन के घटना से मिलित-जुलित सुव्यवस्थित होवऽ हे। मगही कहानी में भी एही सब लागू होवऽ हे।

मगही कहानी के इतिहास काल के दू भाग में बाँटल जा सकऽ हे।

(क) मगही जागरन इया मगही विकासकालीन कहानी (ख) समृद्धिकालीन कहानी।

(क) मगही जागरन आ मगही विकासकालीन कहानी (सन-1945 ई० से 1973 ई० तक)

मगही कहानी के बारें में कहल जा सकऽ हे कि ई बीसवीं सताब्दी के मध्य काल से निखरे लगल हल। जेकरा से मगही के जागरन काल के सुरुआत भेल। 1945 ई० में हिन्दी कहानी के साथे-साथे मगही के कहानी भी अप्पन लोकप्रियता बना लेलक हल। 1945 ई० के पहिले दू पत्रिका परकासित हो गेल हल। ई पत्रिका में एक पर एक नीमन-नीमन आ सिस्ट कहानी परकासित होल। ई कहल जा सकऽ हे कि मगही कहानी के ई जनम काल हल।

1950 में डॉ० श्रीकांत शास्त्री के संपादन में 'मगही' पत्रिका' के परवेसांक अंक में ही रवीन्द्र कुमार के कहानी 'कोनमा आम' परकासित भेल। जे काफी मसहूर होयल। इनकर दूसर कहानी 'मन के पंछी' भी परकासित होयल हल। इनकर कहानी में नयापन के साथे समस्या मूलक आउ मनोवैज्ञानिक तथ्य के उभारल गेल हल आउ समाधान भी बतावल गेल हल। द्वारका प्रसाद के 'विधाता के वरदान', रामनरेश तिवारी के 'पंडिताई', लक्ष्मण प्र० दीन के 'आफत के पुड़िया' ई जुग के समसामयिक समस्या के उकेरे वाला कहानी हल।

1962 ई० में पहिला बार कहानी 'सेंगरन' के रूप में मगही कहानी के संगरह परकासित भेल। एकर श्रेय डॉ० श्रीकान्त शास्त्री आउ डॉ० रामनन्दन के जा हे। ई कहानी संगरह के सब्भे कहानी में कथा संगठन, चरित्र चित्रन आउ वातावरन के संयोजन पर बिसेस धेयान देला के बाद भी कहानी पुरनकी परंपरा के हल। ई सब कहानी में आदर्सवाद, समाजिक आउ आर्थिक चित्रन देखाइ देवऽ हे। यथार्थ कहीं झलकऽ भी हे तो ओकरा पर आदर्स के लेप चढ़ावल गेल हल।

मगही कहानी आंदोलन आउ पतरिका परकासन के चलते मगही कहानी के नया रूप देखेला मिलऽ हे। 'ए नेऊर तू गंगा जा' में नया रूप देखल जा सकऽ हे जेकर परकासन 1962 के 'विहान' पत्रिका में होल हल। उहे पत्रिका में राधा कान्त के कहानी 'रस विन्दुली' भी छपल। जेकरा कहल जा सकऽ हे कि मगही कहानी के सुरुआती कहानी हे। ई काल के आउ कहानी भी हे तारकेश्वर भारती 'बेटवा हमरे पुतोहियो हमरे', राधा कृष्ण 'फुलवरिया', प्रो० अर्जुन सिंह 'खटमल केस', डॉ० सुमन प्रभा प्रसाद 'निरक्षर न रहम', चितरंजन सिंह 'माय के दरद', प्रभात वर्मा 'कलमुँही', कृष्ण मोहन प्यारे 'नयना जोगिन' आदि। ऊ घरी तक कहानी संगरह परकासित न होल हल, लेकिन पत्र-पतरिका में मगही कहानी तेजी के साथ लिखल जाय लगल। ओहे घरी लक्ष्मन प्रसाद दीन के कहानी 'आफत के पुड़िया' सामने आयल। 'सुजाता' पत्रिका में परकासित श्री रामनरेश पाठक के कहानी 'तेसर' भी चर्चा के केन्द्र में रहल। जे नगर जीवन बोध आउ आधुनिक जीवन के संदर्भ में मनुस्य के मनोविग्यान के परख हे।

(ख) समृद्धिकाल (सन 1973 ई० से 2008 तक)

अजादी के बाद भारतीय जनमानस में तेजी से बदलाव आवे लगल। जेकरा चलते जीवन मूल्य आउ प्राचीन परंपरा के विघटन होय लगल जेकरा से जीवन के हर क्षेत्र में परिवर्तन होय लगल। परिवारिक संबंध टूटे लगल। समाज में भयंकर विसमता–आतंक आउ विकृत जातिवाद के बढ़ावा मिले लगल जेकरा चलते मगही साहित्यकार भी काफी परभावित होयलन। इहे कारण हे कि मगही साहित्य के स्वरूप में काफी बदलाव आयल।

कहानी में भावमूलक आदर्सवाद के आधार छूटे लगल आउ मनोवैग्यानिक विस्लेसन के साथ कहानी प्रगतिवाद के ओर जनवादी नजर अपनावित लिखे जाय लगल।

साहित्यकार चिंतक डॉ० राम प्रसाद सिंह सन् 1977 ई० में 'मगही अकादमी' गया, बिहार के स्थापना कैलन। ई अकादमी के गठन से सैकड़ो कहानीकार आ कवि परकास में अयलन। डॉ० राम प्रसाद सिंह कई दर्जन किताब के परकासन कैलन आ करैलन। उनकर मगही आंदोलन पूरा बिहार के मग्गह इलाका से झारखंड तक ले जोर पकड़ले हल। ओहे घरी डॉ० सिंह द्वारा संपादित मगही कहानी संगरह 'सोरही' के परकासन होयल। 1977 ई० से इनकर संपादन में 'मगही लोक' साहित्यिक मासिक पतरिका के परकासन सुरू हो गेल हल। दुबारा 'मगही समाज' मासिक पतरिका के परकासन करलन। एकरा में मगही के निमन–निमन कहानी परकासित होय लगल।

सुरेन्द्र निर्द्वन्द्व के किताब 'मूर्गा बोललक' 1976 में परकासित होयल। जेकरा सं सुतल कहानीकार लोग जागलन। मगही अकादमी, गया से दयानन्द बटोही के 'कफनखोर' सिरसक मगही कहानी संगरह परकासित होयल। ई कहानी संगरह के कहानी में आम अदमी के गरीबी आ विवसता से उपजल प्रगतिवादी विचार धारा के अभिव्यक्ति भेल हे। ओहे घरी डॉ० स्वर्ण किरण के कहानी संगरह 'तिन डिड़िया' परकासित होयल।

ई समय के कहानी में जहाँ जनवादी तेवर देखाई पड़ऽ हे उहें आँचलिकता के महक भी मिलऽ हे। ऊ घरी प्रो० दिलीप कुमार के कहानी 'हमरा बाँट दऽ', राधा कृष्ण प्रसाद के कहानी 'फुलवरिया', डॉ० राम प्रसाद सिंह के कहानी 'बाढ़ आउ सुखाड़', केशव प्रसाद वर्मा के 'चंपिया', गाँव के दरद', 'गुलबिया' 'जिरवा काकी', 'छितवन के छाँह' के नाम परमुखता से लेवल जा सकऽ हे। ई कहानी में परदेस बिसेस के सुसमा, भासा, रीतिरिवाज, समकालीन जीवन के उलझन से पनपल अदमी के कुंठा आ घुटन से जूझित गँवई परिवार के पता चलऽ हे। 'झपसिया माय' आउ 'नया जिनगी' कहानी में डॉ० भरत सिंह समाजिक चेतना के नया मोड़ पर ला के चिन्तन कैलन हे। इनकर भी दुन्नो कहानी में कलात्मक बदलाव के स्वर मिलऽ हे।

उत्कर्सकाल के मगही कहानी पर अनुकरन मूलक, नीतिपरक, उपदेसात्मक विसेसता वाला परभाव बड़ी दिन से देखे ला मिलित हे। लेकिन समकालीन मगही कहानी हिन्दी कहानी के जइसने लिखल जाइत हे। इहाँ मगही के कुछ मौलिक परकासित कहानी के किताब देखल जा सकऽ हे। तारकेश्वर भारती के कहानी संगरह 'नैना काजर' नाम से 1982 में परकासित भेल। ई किताब के कहानी में गँवई जीवन आउ आँचलिकता के परधानता सब्भे जगह देखाई पड़ऽ हे। उहे किताब पर सबसे पहिले 'डॉ० राम प्रसाद सिंह साहित्य' पुरस्कार भारती जी के मिलल। प्रभात वर्मा के कहानी संग्रह 'विधाता के विधान' में लोक जीवन आउ सांस्कृतिक चेतना नजर आवऽ हे।

डॉ० सुरेश प्र० विमल के कहानी संगरह 'सपना के भोर' आ रामचन्द्र अदीप के कथा संगरह 'बिखरइत गुलपासा' आ केशव प्रसाद वर्मा के संगरह 'टुह–टुह इंजोरिया' परकासित भेल। 'कथा सौरभ' मगही कहानी संगरह 1991 में परकासित भेल। डॉ० लक्ष्मण प्रसाद चंद के संपादन में 'कथा घौद' आ डॉ० ब्रजमोहन पाण्डेय 'नलिन' आउ राधा कृष्ण राय के संपादन में 'एक पर एक' के परकासन होयल।

डॉ० राम प्रसाद सिंह के कहानी संगरह 'बाढ़ आउ सुखाड़' आ 'एगो डउँघी एगो फूल' भी परकासित भेल। 1989 में हरीन्द्र विद्यार्थी के कहानी 'पेंसन के कागज', शैवाल के कहानी 'दहाड़', नरेन के कहानी 'आन्हर खोह के मुसाफिर', जीतेन्द्र वत्स के 'भोर के सपना' दैनिक हिस्दुस्तान अखबार में छपल।

कवि-नाटककार प्रो० अलखदेव प्र० अचल के संपादन में 'कथा कली' के संपादन भी हो गेल हल। प्रो० राम नरेश प्रसाद वर्मा के कहानी संगरह 'सेजियादान' में समाज में व्याप्त कुंठा, बेबसी, पाखंड के चितरन भेल। डॉ० मुरली मनोहर के लिखल कहानी--'टूटल कुरसी', 'एक रूदल', 'लेहू के सिन्दुर', 'छट्ठी मइया' आदि छपल।

1992 में केशव प्रसाद वर्मा के संपादन में 'पाटलि पत्रिका' के मगही कथा विसेसांक के परकासन भेल जेकरा में नया पुरान सब्भे कहानीकार अप्पन--अप्पन प्रतिनिधि कहानी के परकासन करैलन। उहे साल प्रो० अभिमनयु प्रसाद मौर्य आउ प्रो० दिलीप कुमार के संपादन में 'मगही कथा सरोवर' के परकासन भेल जेकरा में समाजिक, मनोवैग्यानिक, विस्लेसन करित दस कहानी हल। राम विलास रजकण के 'कथांकुर' सन 1993 में मगही अकादमी गया से परकासित भेल जेकरा में जनवादी दृस्टिकोन के साथ--साथ राजनीतिक उठापटक आउ प्रतिहिंसा के बरनन भेल। 1997 ई० में बैद्यनाथ शर्मा के कहानी संगरह 'गंगाजल' भी परकासित भेल।

मगही अकादमी, मगही लोक गया से 1998 में 'मग्गह के अवाज' सिरसक संकलन डॉ० राम प्रसाद सिंह के संपादन में परकासित भेल। जेकरा में लगभग एक सौ कहानी छपल। एकरा बाद 'कथा सागर' डॉ० दिलीप कुमार के संपादन में 2002 में छपल। लगले 2003 में 'पइली पाँच पइसा' कहानी संगरह डॉ० सत्येन्द्र कुमार सिंह आउ डॉ० अभिमन्यु प्रसाद मौर्य के 'मगही समसमायिक' कहानी संकलन परकासित भेल जे समाज में व्याप्त अव्यवस्था के चित्रित करऽ हे।

2003 में ही आचार्य मुन्ना प्रसाद के कहानी 'कीमत' आउ 'द्वंद', घमंडी राम के कहानी 'छकुनी के तीन दाग', हरीन्द्र विद्यार्थी के कहानी 'राई में सरसो' 'डुमरी हाल्ट वाली मैडम, 'चन्द्रप्रकाश माया' के कहानी 'इलाज' आ 'दयावान' परकासित भेल जेकर काफी सराहना होयल।

2004 में 'कथा आलोक' कहानी संगरह (डॉ० दिलीप कुमार) आ 'ठकमुरकी लग गेल' कहानी संकलन के परकासन भेल। 2004 के बाद मगही कहानी में नया

लिखनिहार के बाढ़ आ गेल। जेकरा से मगही कहानी के विकास दिन-दूना रात-चौगुना होवे लगल। कहानी के विकास में मगही पत्रिका अलका मागधी, बिहान आ पाटलि के काफी योगदान रहल। एकरा में नया पुराना सब्भे कहानीकार कहानी के एक नया रूप देलन। आचार्य मुन्ना प्र०, डॉ० सत्येन्द्र सिह, डॉ० भरत सिंह, चन्द्रावती, पवन तनय, प्रो० अवधेश कुमार, राम पारिख, लक्ष्मण प्र० चंद, कुमारी सोनाली मिश्रा, राकेश जमुआर, डॉ० वैद्यनाथ शर्मा, डॉ० जितेन्द्र वत्स, शिव प्रसाद लोहानी, श्री कृष्ण मोहन प्यारे, पं० राम नरेश पाठक, डॉ० स्वर्ण किरण, प्रो० सुखित वर्मा, लालमणि कुमारी, सुमंत, अलखदेव प्रसाद अचल आदि नाम परमुख रूप से उभरल। मगही पतरिका में शेखर के कहानी 'मोर्चा' सारथी में मिथिलेश्वर के कहानी 'दरकल खपरी, नरेन के 'मेहूदायल बुल्लेट' काफी चर्चित भेल।

2007 में 'किलमनजारो' कहानी संकलन के संपादक कृष्ण मोहन प्यारे हलन। एकरा में पाँच कहानी डॉ० सत्येन्द्र कुमार सिंह, तीन कहानी चक्रधर जी के आ पाँच कहानी कृष्ण मोहन प्यारे के हल जे काफी लोकप्रिय भेल।

ओहे घरी 2007 में 'सबरंग' संगरह के परकासन भेल जेकर लेखक डॉ० सच्चिदानन्द प्र० हथ। सिकार से संबंधित 'अहेर के अनुभो' विश्वनाथ सिंह भ्रमर के लिखल पुस्तक परकास में आयल। सुरेन्द्र प्रसाद जमुआर के 'पंचगा' भी छप्पल।

हरीन्द्र विद्यार्थी के अठारह कहानी के संगरह 'राई में सरसों' छपेला प्रेस में गेल हे।

मगही कहानी के विकास में पत्र-पतरिका के जोगदान भी काफो सराहे जुकुर हे। मगही के लोकप्रिय पत्रिका 'विहान', अलका मागधी, पाटली, टोला-टाटी, अखरा, मगध समाचार, मगही भाई, तरुण तपस्वी, मागधी (तैमासिक) मगही, मगही लोक, मगही समाचार, मगधाग्नि, मगही समाज, कोंपल, मांजर, मागधी, निरंजना, गौतम, पनसोखा, चयवनांचल, कचनार, मगह के हुंकार, अँकुरी, मगधांचल, मगहिया अखरा, मगधवाणी, मगध भूमि, मगही (दिल्ली), समकालीन मगही (दिल्ली) सिरजन, अखरा, सतत मगही सनेह, कसउटी, सारथी ई सब्भे पतरिका के कहल जा सकऽ हे कि मगही कहानी के विकास में परमुख योगदान देलन हे।

मगही उपन्यास

मगही भासा में उपन्यास के विकास में हिन्दी, बंगला आउ अँगरेजी उपन्यास के परभाव नजर आवऽ हे। कहल जा सकऽ हे कि मगही उपन्यास हिन्दी, बंगला,

अँगरेजी उपन्यास से परेरना लेके लिखल जाय लगल । मगही उपन्यास के इतिहास बीसवीं सदी के तीसरा दसक से मिलऽ हे।

मगही साहित्य के जागरन काल में नवादा के मुख्तार जयनाथ पति सबसे पहिला उपन्यास 'सुनीता' के रचना कैलन। एकर परकासन 1927 ई० में होयल। दूसर उपन्यास 'फूल बहादुर' 1928 में परकासन होवे के परमान हे। जेकर रचनाकार जयनाथपति ही हथ। 'सुनीता' एगो समाजिक उपन्यास लिखल गेल हल। इनकर दूसर उपन्यास 'फूल बहादुर' के दुबारा परकासन 1974 में भेल।

जयनाथ पति मगही उपन्यास के लिखना ऊ घरी सुरू कैलन हल जब प्रेमचंद, जयशंकर प्रसाद के लेखनी उपन्यास के ऊपर चलित हल। पाठक आ परकासन के सुविधा के कारण हिन्दी अप्पन वर्तमान स्वरूप से आगे बढ़ गेल आ मगही पीछे छूट गेल।

बीसवीं सताब्दी के सातवाँ दसक में मगही उपन्यास ला बड़ा अच्छा समय मानल जा हे। ऊ घरी मगही के चार उपन्यास परकासित भेल हल। राजेन्द्र कुमार यौधेय के 'बिसेसरा' अक्टूबर 1962 में, डॉ० रामनन्दन के 'आदमी आ देवता' 1965 में, बाबूलाल मधुकर के 'रमरतिया' 1968 में आ द्वारका प्रसाद के 'मोनामिम्मा'1969 में छप के पाठक के सामने आयल।

राजेन्द्र कुमार यौधेय के 'बिसेसरा' एगो समाजिक उपन्यास हे जेकर कथा वस्तु समाज के एक दम पिछड़ल जात मुसहर के जीवन से लेल गेल हे। ई उपन्यास में वर्ग चेतना के साथे–साथे समाजिक बदलाव ला जूझित लोग के बरनन हे। ई उपन्यास ऊँच-नीच, बड़-छोट के भेदभाव पर करारा परहार करके समाज में समानता के भाव जगावेला चाहऽ हे। एकरा में बंधुआ मजदूरी से मुक्ति के संघर्स मुखरित भेल हे। ई परतिक प्रधान उपन्यास है। उपन्यासकार के आंचलिकता में आस्था के साथ-साथ अतिउपेच्छित वर्ग मुसहर के प्रति गहरा संवेदना भी हे।

'आदमी आ देवता' पाठक के सामने 'बिसेसरा' के बाद आयल। 'आदमी आ देवता' पौरानिक उपन्यास हे जेकर कथा वस्तु स्कंदपुराण से लेवल गेल हल। उपन्यास में अदमी कइसे अपन करम के बल पर सफलता के उच्च सिखर पर पहुँच जा हे बतावल गेल हे।

बाबू लाल मधुकर के उपन्यास 'रमरतिया' में जमींदारी युग से जुड़ल समस्या के उभारल गेल हे। जेकरा मे परंपरागत रूढ़िवाद के विरोध करित देखावल गेल हे।

द्वारका प्रसाद के रचना 'मोनामिम्मा' एकदम मनोवैग्यानिक रचना हे जेकरा में नायक नायिका के मनोविग्यान के आकलन करित कौतूहल–कामकुंठा, दमितइच्छा, परनयसुख के सजीव चित्रन करल गेल हे।

चन्द्रशेखर शर्मा के लिखल उपन्यास हे 'साकल्य', 'सिद्धार्थ' आ 'हाय रे ऊ दिन'। 'हाय रे ऊ दिन' में बैदिक संस्कृति आ ओकरा में विकृति से पाठक के परिचय करावल गेल हे।

बीसवीं सताब्दी के आठवाँ दसक में परकासन के दृस्टिकोन से मगही उपन्यास ला सुन्दर समय हल। ई दसक में शशि भूषण उपाध्याय मधुकर के उपन्यास 'सँवली', 1977 ई० में सत्येन्द्र जमालपुरी के 'चुटकी भर सेनुर' फरवरी 1978 में आ डॉ० श्रीकान्त शास्त्री के 'गोदना' जून 1977 ई० में परकासित भेल।

शषि भूषण उपाध्याय मधुकर के उपन्यास 'सँवली' में समाजिक समस्या, राजनीति, प्रेम आ समसामयिक समस्या के बड़ी सुन्दर ढंग से उभारल गेल हे।

'चुटकी भर सेनुर' सत्येन्द्र जमालपुरी के लघु समाजिक उपन्यास में परम्परागत समाज के कोढ़ जे दहेज बनल हे ओकरे विरोध करल गेल हे। 'गोदना' उपन्यास आज के समाज में व्याप्त अव्यवस्था के उजागर करऽ हे

नौवाँ दसक में परकासित उपन्यास 'बस एके राह' के रचनाकार आ 'संघर्षदूत' के संपादक केदार 'अजेय' 1 मई 1988 के परकासित कैलन। एकरा में सिच्छा, धर्म, राजनीति के छेत्तर में व्याप्त त्रिसंगति के उजागर करल गेल हे।

स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद छिन्न–भिन्न अर्थव्यवस्था आ राजनीति में छल-कपट से उत्पन्न बातावरन पर उपन्यास लिखे जाय लगल हल।

बीसवीं सताब्दी के अंतिम दसक में तीन मगही उपन्यास के परकासन भेल जे 'नरक सरग धरती', 'धूमैल धोती', आ प्राणीमहासंघ' हे। डॉ० राम प्रसाद सिंह के उपन्यास 'नरक सरग धरती' 1992 में छपल। ई उपन्यास के वृहद कलेवर में नानी से नाती तक तीन पीढ़ी के मनः स्थिति के समाजिक सांस्कृतिक, धार्मिक आ राजनैतिक परिवेस के चित्रन हे। आज वर्तमान समाज में व्याप्त जाति व्यवस्था से उत्पन्न विकृति के झलक मिलऽ हे।

ई उपन्यास में रूढ़िवाद, अंधविस्वास, धर्मांधता, जातियता आउ उग्रवाद से विखंडित हो रहल समाजिक समरसता के स्नेह, सदभाव, सत्य, अहिंसा के अधार पर पुनर्स्थापना आउ मेहनत सहयोग के बल पर रास्ट्र के विकास करल देखावल गेल हे।

'धुमैल धोती' के रचनाकार कवि कथाकार डॉ० राम विलास रजकण हथ। एकर परकासन 1995 ई० में होयल। एकरा में धर्म के नाम पर दंगा–फसाद राजनीतिक, छल-प्रपंच, विकास के नाम पर लूट, पुलिस-नेता गँठजोड़ के खुल करके समाज के सामने रक्खल गेल हे।

मुनिलाल सिन्हा के मगही उपन्यास 'प्राणी महासंघ' 2 अक्टूबर 1995 में परकासित होयल हल। 'समस्या' डॉ० राम प्रसाद सिंह, 'अछरंग' राम नरेश प्रसाद वर्मा, 'बबुआनी अइँठन छोड़ऽ' आचार्य सच्चिदानन्द, 'बाबा मटोखर दास' परमेश्वरी सिंह, 'अनपढ़', 'गोचर के रंग', 'गेरु गोरखियन के संग' मुनि लाल सिन्हा सीसम के रचना हे।

'बबुआनी अइँठन छोड़ऽ' के रचनाकार आचार्य सच्चिदानन्द के समाजिक उपन्यास 2005 में परकासित भेल। इनकर उपन्यास में आज समाज में व्याप्त जात–पात, ऊँच–नीच, नरसंहार जइसन मूल समस्या पर परकास डालल गेल हे।

मगही आलोचना

साहित्य के कियारी में पोथियन पढ़–सुन के ओकर गुन–अवगुन के झार-पछोर करइत ओकरा बारे में अप्पन मत रखना ही आलोचना हे। ई आलोचना काव्य, उपन्यास, नाटक, निबंध, कहानी ओगैरह के हो सकऽ हे। इहाँ तलक कि खुद आलोचनात्मक पोथियन के भी आलोचना कैल जा सकऽ हे। जदि हम साहित्य के जीवन के व्याख्या समझऽ ही तऽ आलोचना के ऊ व्याख्या के व्याख्या माने पड़त। कोई भी पोथी के आलोचना करइत खनी हमरा ऊ पोथी आउ ओकर रचवैया के मूल मतलब समझ लेवेला चाहऽही एकर बाद कोई राय के स्थिर करी। दोसरो अदमी कोई पोथी इया ओकर रचताहर के जे आलोचना कैलक हे ओकरा से हम फयदा उठा सकऽ ही, मुदा ऊ लाभ ओत्ते जादे आउ सही न हो सकऽ हे जेतना खुद पढ़ला से होवऽ हे, कारन ऊ दसा में हम ऊ आलोचक के विचार से परभावित हो जायम आउ अप्पन कोई राय स्थिर करे में असमर्थ रहम। एक बात सही हे अप्पन आलोचना में हम दोसर आलोचक के अध्ययन व आलोचना से कुछ लाभ उठा सकऽही। कवि जीवन के व्याख्या करऽ हे तऽ ऊ एगो सामान्य पाठक के अपेच्छा जादे ग्यान-संपन्न होवऽ हे। ओकर अध्ययन जादे गंभीर होवऽ हे, इहे लेल ऊ कोई कवि इया लेखक के रचना के किसिम–किसिम अंग पर रोसनी डाल हमरा ढेरो नया बात बतलावऽ हे आउ नया राह दिखलावऽ हे। ऊ हम्मर राहे में एगो बेस

मीत आउ राह–देखवैया के काम दे हे। ऊ हमरा सिखावऽ हे कि ओकर आलोचना से हम बहुत कुछ लाभ उठा सकऽ ही आउ हम्मर ग्यान बहुत कुछ बढ़ सकऽ हे।

पढ़वैयन के मन में ई सवाल उठना जादे सोभाविक हे कि अमुक पोथी के जीवन के जे व्याख्या कैल गेल हे आउ जे दोसर बात बतावल गेल हे ऊ ठीक हे इया नय, कला के नजरिया से ऊ पोथी बेस हे इया नय। ई रंगन के सवाल हम्मर मन में अपने–आप उठऽ हे। कोई भी पोथी पढ़े के पहिले कम से कम सचेत होवे खातिर ई सवाल के जबाब जानना जरूरी हे। साहित्य के संबंध, जीवन के व्याख्या, नीति, समाज ओगैरह ढेर बातन से होवऽ हे आउ एही ओजह से ओकर गुन–अवगुन के झारे-पछोरे के जरूरत होवऽ हे। 'भिन्नरुचिर्हि लोकः' ओला सिद्धान्त के मोताबिक सब्हे लोग अलग–अलग अप्पन राय के अनुसार कउनो पोथी के बेस इया बेजाय बतावऽ हथ। हमरा जे कहानी बेस लगल संभव हे कि ऊ अपने के एकदमे पसंद न आवे। हम्मर समझ में जे नाटक तनियो काम के न हे, ओकरे अउरो लोग लमहर, बड़ा कह सकऽ हथ। जे अदमी तनियो मनी समझ रखऽ हे, ऊ कोई पोथी पढ़इत खनी ओकरा बारे में अप्पन बेस इया बेजाय राय जरूरे स्थिर कर ले हे। जब हम्मर कोई मित हमरा कोई नया पोथी ला के पढ़े ला दे हे तब सबसे पहिले हर्म ओकरा से एही सवाल करऽ ही कि किताब कइसन हे? तब ओकरा हम खुद पढ़ के ओकरा बारे में अप्पन मत स्थिर करऽ ही। एक दफे कोई पोथी इया किताब पढ़ के मत तय कैल जा हे, दू–तीन दफे जादे सावधानी से ऊ किताब इया पोथी पढ़ला पर ऊ मत में भी बदलाव आ जा हे। कभी-कभार तऽ जादे गहराई से पढ़ला पर मत स्थिर करे में परेसानी होवऽ हे तब ऊ परेसानी के मिटावे खातिर बढ़िया आलोचक के जरूरत होवऽ हे। बेस किताब पढ़े खातिर बढ़िया आलोचक के राय–मसविरा हमरा ला कारगर हो जा हे। कोई भी कवि इया रचना के बेस ढंग से समझे खातिर ऊ कवि ला सरधा इया सहानुभूति होवे के चाही। एकर अभाव में हम ऊ कवि इया लेखक के हिरदा तक न पहुँचम। एही ओजह हे कि सरधा इया सहानुभूति के अभाव में आउ मन में इरखा–डाह के भाव रख के जे आलोचना कैल जा हे ओकरा विद्वान कबहियो आदर नय दे हथ।

आलोचक के विद्वान, बुधगर, गुनगर आउ पच्छपात से दूर रहेओला होवे के चाही। जेहमें ई सब गुन न मिले ओकरा समालोचना के काम से दूरे रहे के चाही। जउन समालोचक में ई सब गुन होवत, ऊ बहुत सहज ढंग से समिच्छा ला रखल पोथी के बात व अर्थ समझ जयतन। आलोचक के मुख काम हे कि ऊ आलोचना

जुगुत पोथी इया किताब के वास्तविक सरूप में देखथ। आलोचक में अप्पन चउगिरदी ताके–झाँके के तागत होवे के चाही। जब तलक अगल–बगल में का लिखल जा हे इया का लिखाय के चाही के ग्यान आलोचक के न होयत तबतक उनकर आलोचना में सफलता न मिलत। ऊ बुधगर न होतन तऽ पानी–दूध सन बात के हिगरावे में ऊ असमर्थ हो जयतन। ऊ पच्छपातरहित न होयतन तऽ उनकर झार–पछोर निरर्थक हो जात। पच्छपात इया इरखा के ओजह से कभी–कभार छोट–मोट अनर्थ आउ अन्याय भी हो जा हे। कोई पोथी के पच्छपात भरल समालोचना देख ढेर लोग ऊ पोथी के पढ़े में बेकार समय न गँवावेला चाहऽ हथ, इरखा भरल आलोचना के ओजह से पढ़ताहर कभी–कभार बेसो पोथी के लाभ से वंचित हो जा हथ। ई लेल समालोचक के विद्वान, समझदार, गुनगर होवे के साथ–साथ निस्पछ होना भी जरूरी हे। अइसने समालोचक के समालोचना से ही साहित्य के भी तरक्की होत आउ पाठक के भी लाभ मिलत। करे के तो आलोचना सब्भे लोग कर लेतन मुदा आलोचना एगो खास कला हे आउ ओकरा ला विसेस योग्यता व सिच्छा–दिच्छा जरूरी हे। साथे–साथ आलोचक के अप्पन मन आउ विचार पर भी अधिकार होवे के चाही। एकर अभाव में ऊ ठीक–ठाक आउ उदारता के साथ विचार न कर सकऽ हे।

अँगरेजी के नामी गिरामी विद्वान जॉनसन के जउन लेखक के विचार इया सिद्धान्त से सहानुभूति हो जा हल ओकर पोथी के आलोचना तऽ ऊ ठीक ढंग से कर दे हलन मुदा जेकर विचार से उनका सहानुभूति न होवऽ हल ओकर पोथियन के आलोचना के समय उनकर साहित्यिक ग्यान न मालूम कन्ने गायब हो जा हल आउ ऊ बड़ बुरी तरह से ओकर खोज खबर ले हलन। हम्मर मगही अँगना में अइसन रोग न पनपे के चाही। कारन मगही में बड़का–बड़का पोथी बँधना में बँधल पड़ल हे आउ ओकर आलोचना न कैल गेल हे, कत्ते अदमी तऽ जानबो न करऽ हथ। मगही आलोचना साहित्य अभी जुआन न भेल हे, लरिकाइ पार कर के ऊ किसोर तो बनल हे मुदा एहमें गुनगर आउ अगड़धत् लोग अप्पन कलाबाजी तनि कम दिखा रहलन हे।

मगही आलोचना के ढेरो कियारी हे (1) **सैद्धान्तिक आलोचना**–एहमें साहित्य के सिद्धान्त आउ साहित्य–दर्सन के विवेचन कैल जा हे। रीतिग्रंथ, लच्छन ग्रंथ आ काव्य सास्तर एकरे भीतर हे। ई किसिम के आलोचना साहित्य इया काव्य के सरूप बिसलेसित करऽ हे।

(2) **व्यवहारिक आलोचना** : एकर जरिए साहित्यिक रचना के व्याख्या आउ मूल्यांकन कैल जा हे। विसय, सैली, मकसद, नजरिया आउ मानदंड के बदौलत व्यवहारिक समालोचना के तीन ठो भेद हे (क) **परभावात्मक**–आत्मप्रधान आलोचना के भीतर कोई रचना पढ़ला के बाद मन पर पड़ल परभाव के आकलन कैल जा हे। एकरा में कल्पना आउ भावतत्व के परधानता हो। एहमें आलोचक के नजरिया के कमाल लउकऽ हे। एहमें नियम के बजाय स्वच्छता के सहारा लेल जा हे। एहमें वानी विलास जादे होवऽ हे। (ख) **निरनयात्मक**–एहमें आलोचक जज सन फैसला दे हे। ऊ साहित्यिक रचना के अप्पन विचार–पद्धति से मेल करावऽ हे। (ग) **व्यख्यात्मक आलोचना**–एही आलोचना के बदौलत हम कोई रचना के महातम बतावऽ ही। भावमयी समालोचना ला रचना के रूप ग्यान जरूरी हे जे व्याख्या से मिलऽ हे। एकरो सास्तरीय, समाजवादी, मनोविस्लेस्नात्मक, ऐतिहासिक तुलनात्मक, प्रगतिवादी, चरितमूलक सन कियारी में बाँटल जा सकऽ हे।

सच बात तऽ ई हे कि कोई पोथी के महातम आउ उपयोगिता के निरनय बड़ कठिन काम हे। कोई वस्तु के देखके ओकर सही सरूप समझना कठिन हे। हम तऽ अप्पन योग्यता, संस्कार आउ रुचि के मोताबिक ही ओकर सरूप समझब। आलोचना से हम व्यक्तित्व आउ रुचि वैचित्र्य के कबहियो हिगरा न सकऽ ही। आउ जदि हम साहित्य के अध्ययन से पूरा लाभ उठावे ला चाहऽ ही तऽ गुरुजन आउ बुधजन के बतावल राह पर हमरा खुद्दे चले के मेहनत करे के चाही।

मगही आलोचना के विकास आउ जनम दे के पाले पोसे ओला पहिलौठ कड़ी में महापंडित राहुल सांकृत्यायन, प्रो० कपिलदेव सिंह, कृष्णदेव प्रसाद, सुमन वात्सायन, भिक्षु जगदीश कश्यप, डॉ० श्रीकांत शास्त्री, डॉ० सम्पत्ति अर्याणी, प्रो० रामनाथ शर्मा, डॉ० रामनन्दन, डॉ० विन्देश्वरी प्रसाद सिन्हा, डॉ० नर्मदेश्वर प्रसाद, डॉ० शिवनन्दन प्रसाद, डॉ० विश्वनाथ प्रसाद, प्रो० केसरी कुमार, डॉ० सरयू प्रसाद, राम बालक सिंह 'बालक', डॉ० रामनरेश मिश्र 'हंस' के नाम सादर लेल जा सकऽ हे। ई कड़ी मगही आलोचना के नेउ रखलन। ई काम सन् 1938 से 1960 तलक चलल। एकरे पर गिट्टी, गारा, ईट, सीमेंट के सान गूँथ के बढ़िया भीत उठौलन रामनरेश पाठक, हरिश्चन्द्र प्रियदर्शी, डॉ० स्वर्ण किरण, डॉ० रामप्रसाद सिंह, डॉ० ब्रजमोहन पाण्डेय 'नलिन', हरीन्द्र विद्यार्थी, घमंडी राम, शेखर आदि। ई दौर में मगही प्रगतिवादी, समाजवादी, तुलनात्मक मगही आलोचना के हर तरह से मजबूत बनावे में मसगूल हथ–डॉ० जितेन्द्र वत्स, डॉ० देवकुमार पासवान, डॉ० सत्येन्द्र

कुमार सिंह, डॉ० भरत सिंह, डॉ० अभिमन्यु मौर्य, रामविलास रजकण, प्रो० तृप्तिनारायण शर्मा आदि।

ऊपर जे नाम गिनावल गेल उनकर आलोचना संबंधी गतिविधि पत्र–पतरिका, पोथी के आमुख, परिच्छन ओगैरह में छप्पल हे। ई सब्हे आलोचक सैद्धान्तिक आउ व्यवहारवादी आलोचना के बढ़ावा दे रहलन हे। एकर अलावे अैउरो किसिम के आलोचना रसे–रसे बढ़इत हे।

आलोचना से साहित्य के उठान दिखाई पड़ऽ हे, ई बात सच हे कि मगही आलोचना साहित्य धीरे-धीरे अप्पन मानदंड बना रहल हे। अभी तऽ मगही आलोचना के अप्पन मान दंड फुजबे कैल हे।

मगही निबंध

निबंध बौद्धिक अभिव्यक्ति के साधन हे। एहमें निजी विचारन के एगो कलात्मक डोरा में पिरोवल जा हे। ओकर सैली बड़ रोचक आउ भावमय होवऽ हे। व्यापक सहानुभूति, आत्मीयता के वातावरन के साथ व्यक्तिगत आउ स्वानुभूति के विचारन के नैसर्गिकता ओहमें रहऽ हे। कल्पना के सहजोग से लेखक एगो विसय से दोसर डोरा पकड़ के आगू बढ़ ढेरो टुकड़ियाहा चितरन के सिरजन करऽ हे। निबंध के सुस्ताल सैली जादे असरदार होवे के चाही। मतलब ई हे कि निबंध में विचारन के मौलिकता, क्रमबद्धता आउ विसद अभिव्यक्ति मूल रूप से परगट हो हे। व्यक्तिगत चिंतन के गुन पूरा तरह से निबंधकारन में मिले के चाही।

अंगरेजी विद्वानन तऽ अंगरेजी के जरिए मगही भासा, साहित्य, सबद संपदा जौर कैलन जहाँ-तहाँ मगही गद्य ओगैरह पर भी रोसनी डाललन हे। मगही व्याकरन के सुघड़ रूप सजावे आउ मगही निबंध के बीज बोये में हेनरी काल ब्रुक, फ्रांसिस बुकानन, जॉन वीम्स, सर जार्ज ग्रियर्सन के नाम जादे सराहे जुकुत हे। अप्पन–अप्पन पोथियन में एखनिन बड़ विस्तार से चर्चा कैलन हे। हर जिला के गजेटियर में मगही निबंध के भी संकेत मिलऽ हे।

नवम्बर 1955 ई० से 1956 ई०।

'मगही' पतरिका नवम्बर 1955 ई० से निकसे लगल। बरीस 1 अंक 2 दिसम्बर 1955ई० के अंक में स्व० कृष्णदेव प्रसाद के निबंध 'हम्मर अप्पन अनुभव' डॉ० विन्देश्वरी प्रसाद सिंह के 'मगध के बड़प्पन आउर हम्मर जिम्मेवारी', प्रो० कामेश्वर प्रसाद अम्बष्ट के 'सबसे पहिले पूजा केकर होवे के चाही', पं० मदनमोहन

मिश्र 'पत्रकार' के 'मगही के मजेदार कहाउत', श्री लाल बिहारी प्रसाद के 'सिच्छा' जनवरी 1955 ई० 'मगही' में छपल। भिक्षु जगदीश कश्यप के 'पटना कइसे बसल', डॉ० विन्देश्वरी प्रसाद सिन्हा के 'मगही के आचार्य स्व० कृष्णदेव प्रसाद, हरिदास ज्वाल के 'महान मगध', श्री शिवाराम योगी उर्फ ठाकुर रामबालक सिंह के 'मगही जिन्दा भासा हे' बड़ सुत्थर निबंध हे। 'मगही' फरवरी 1956 ई० में श्री द्वारका प्रसाद के छप्पल 'आँख में धूरी', 'मगही' मार्च 1956 ई० में छपल श्री राजेन्द्र कुमार यौधेय के 'होरी आउ वसन्तोत्सव', श्री शिवेश्वर नाथ के 'अप्सरा से अफसर' श्री कामेश्वर शर्मा नयन के 'मग्गह के वसन्त उत्सव', 'मगही' अप्रील 1956 में ठाकुर रामबालक सिंह के 'अशोक लेख', श्री शिवेश्वर नाथ के 'बजार भाव मंदा हल', ठाकुर धरमदेव सिंह के 'बौध धरम के समाजिक महातम, 'मगही' मई 1956 ई० के अंक में भदन्त आनन्द कौशल्यायन के 'बइसाख पूर्निमा'; डॉ० विन्देश्वरी प्र० सिन्हा के 'मगध में बुध भगमान', श्री रामेश्वर मिश्र के 'चार आर्य सत्य', श्री सुमन वात्सायन के 'नालन्दा विद्यापीठ', श्री रामनारायण शास्त्री के 'बुध धरम के मूल पर विचार', डॉ० सम्पत्ति अर्याणी के 'भगवान बुद्ध के सासन', प्रो० कामेश्वर शर्मा 'नयन' के 'पालिसाहित्य में परकिरती बरनन' बड़ चर्चित निबंध हे। 'मगही' जुलाई 1956 ई० में विन्देश्वरी प्रसाद सिन्हा के 'मगध में बुध भगवान', श्री चतुर्भुज के 'भगवान बुद्ध', श्री शंभुनाथ जायसवाल के 'बुद्ध गया' शिवेश्वर नाथ के 'तनी इनका दन्ने ताकूँ' सराहनीय हे। अगस्त 1956 ई० 'मगही' के अंक में श्री मुरारी पाठक के 'मगह के धन विभो', श्री शंकरदयाल सिंह के 'कसी के विभूतिअन से भेंट', श्री शंभुनाथ जायसवाल के 'कुसीनगर', श्री महेश्वर तिवारी के 'मगही के लोकसाहित्य' 'मगही' दिसम्बर 1956, डॉ० श्री कृष्ण सिंह के 'बौध धरम के परचार जरूरी', श्री शंभुनाथ जायसवाल के 'साँची', श्री महेश्वर तिवारी के 'मगही भासा एक्के निगाह में', 'मगही' अक्टूबर 1956 के अंक में श्री योगेश्वर प्रसाद 'योगेश' के 'विजया दसमी', प्रो० रामननदन के 'दिवाली के महातम', हरिदास ज्वाल के 'गोरथ गिरि', डॉ० अनन्त लाल वर्मा के 'आजकल के भोजन', नवम्बर 1956 'मगही' के अंक में डॉ० श्रीकृष्ण सिंह के 'बुध के धरम', श्री वदरी नाथ शास्त्री के 'मगही से छरछात भेंट', विश्वनाथ प्रसाद 'जगदीशपुरी' के 'लोकनाटक आउ लोकरंगमंच' मगही निबंध के सुरुआती धरोहर हे। दिसम्बर 1956 ई० 'मगही' में श्री सुरेश दूबे 'सरस' के 'मगही कवि कासीदास बड़ पठनीय निबंध हे।

ई जुग में स्थायी विसय पर निबंध कम लिखल गेल। एहमें विचार के परधानता हल। समाजिक घटना, देस–समाज के चर्चा, परबत्योहार, उत्सव, तीरथस्थल, जतरा, पर्यटन के व्यापक बरनन भेल हे।

1958–1976 ई० तलक जे निबंध मगही में लिखल गेल ऊ जादे सराहे जुकुत हे। डॉ० विन्देश्वरी प्रसाद सिन्हा के मई 1958 'बिहान' में छपल निबंध 'हमनी का चाहऽ ही', डॉ० सम्पत्ति अर्याणी के 'प्राचीन मगध: ऐतिहासिक पीठिका', जयेन्द्र के एगो निबंध 'हम्मर अप्पन भासा पर गरब नयँ' 'मगही' के मई 1957 ई० के अंक में छपल। बिन्दु बाला सिन्हा के सोध लेख 'मगही भासा आउ संत काव्य' भी छपल।

'विहान' मई 1958 बरिस अंक में प्रो० कुमुद कुमार सिन्हा के निबंध 'पिरथिवी कइसे बसल' छपल हे। दिसम्बर 1956 विहान में श्री मोहनलाल महतो वियोगी के निबंध 'मगही हिन्दी के विरोधी न', डॉ० नर्मदेश्वर प्रसाद के लिखल 'ललित कला के सिच्छा' स्तरीय आउ विचारनीय हे। मई 1959 विहान के छप्पल श्री अमरनाथ जी के निबंध 'भारती काव्य में वसंत बरनन' के बचल अंस मई 1959 ई० के अंक में छपल। जून 1959 ई० विहान में डॉ० रामशरण शर्मा के लेख पहिला समराज के उठान भाग-2 हे। एकरा अलावे श्री जगदीश प्रसाद के 'मगही भासा' पर ललित निबंध छपल आउ आनंद दरियापुरी के लिखल 'करिया भूत के विस्वास' छपल। जगदीश प्रसाद एगो आउर लेख 'मगध के मूर्ति कला' पर लिखलन जेकर सेस भाग सितम्बर 1959 ई० के अंक में छपल। जुलाई + सितम्बर 1960 ई० के अंक में श्री डी० सी० सरकार के लिखल निबंध 'अशोक के धरम' छपल। एहमें 'मगही कहाउत' पर श्री धीरेन्द्र नाथ सिंह के निबंध भी छपल हे। सेस भाग मई 1962 ई० के विहान अंक में छपल। 'विहान' जनवरी 1964 ई० के अंक में श्री मिथिला शरण पाण्डेय के लिखल 'मगध भूमि एगो परिचय' ऐतिहासकि निबंध हे। बिहान अप्रैल 1965 ई० के अंक में डॉ० श्रीकांत शास्त्री के लिखल 'मगही भासा के उत्पत्ति' एगो सोध निबंध हे। बिहान फरवरी 1966 के अंक में डॉ० नागेश्वर शर्मा के 'बतरस', श्री योगेश्वर प्र० सिंह 'योगेश' के 'मग्गह के कुछ देखनिहार स्थान' भी निबंध रूप में छप्पल। जुलाई 1965 ई० विहान' के अंक में डॉ० रामनन्दन के हाथ में अनूदित निबंध 'हम्मर भूमि जहाँ हम्मर वास हे' छपल। एकर मूल लेखक हथ जे. एन. समद्दार। एहमें प्रो० मुरली मनोहर के निबंध 'मग्गह के मखउलिया–देंवन मिसिर' भी छपल। अगस्त + सितम्बर 1966 ई० 'बिहान' में जे.

एन. समाद्दार के निबंध 'मगध से घिरना', प्रो कुमुद कुमार सिंहा के 'नागपूजा' निबंध छपल। नवम्बर 1966 ई० विहान में जे० एन० समाद्दार के निबंध 'सदानीरा आउ शिशुपाल वंस' खोज लेख छपल। इहे अंक में द्वारका मिश्र वैद्य के लिखल 'मग्गह के पुरान गाँव ओड़ो' छपल हे। जून 1966 ई० बिहान में प्रो० दीनानाथ शरण के निबंध 'की विद्यापति के भासा मैथिली हे' छपल। मई 1965 ई० बिहान में मगध किरित के लिखल 'पुरातन मगध में चित्रकारी', हरिशंकर मिश्र के 'भासा के समस्या आउ ओकर समाधान' निबंध छप्पल। सितम्बर 1965 बिहान में मुरली मनोहर 'मगह के मवारी' निबंध छप्पल। सितम्बर 1965 ई० बिहान में डॉ० नागेश्वर शर्मा के 'मगही लोक गाथा' पर लेख छपल हे। इहे अंक में श्रीमती रागेश्वरी सिंह 'मगही के लिपि' पर विचार करइत एगो बेस निबंध लिखलन। जनवरी 1967 ई० विहान' में छपल डॉ० श्रीकात शास्त्री के 'अपभ्रंस साहित्य में मग्गह', डॉ० नागेश्वर शर्मा के 'अउरत', जे० एन० समाद्दार के 'मगध भूमि नंद से कुषाण तक', उपेन्द्र नाथ मिश्र के 'बाबा वटेसवर नाथ' निबंध छपल। मार्च 1967 ई० विहान में योगेश के निबंध 'मगही भासा [illegible] विचार', एन० समाद्दार के 'पालवंस आउ मगध के पतन' निबंध हे। अप्रील 1967 में वाचस्पति गैरौला के 'मगध के पुरान सासन परम्परा', कुसुम कुमारी मिश्र 'राम गया उदेरा स्थान' बड़ वढ़िया निबंध हे। अक्टूबर 1967 ई० विहान में उमेश्वर के लिखल 'मगही लोकगीत में सोहर' निबंध छपल। जून 1967 बिहार में छपल श्रीकांत जैतपुरिया के 'कवि लोग से दू बात' श्याम नारायण मिश्र के 'स्वर्ग आउ प्रजातंत्र', उपेन्द्रनाथ मिश्र के 'अफसर' निबंध पढ़े लायक हे। अगस्त 1967 ई० बिहान में एस. पी. पांशुल के लिखल 'मुक्त छंद आउ मगही कवि : एगो विचार' आलोचनात्मक निबंध हे। अनूप के लिखल 'गया के बौद्ध भिक्षुक' एगो ऐतिहासिक निबंध हे। जनवरी 1968 बिहान में डॉ० नागेश्वर शर्मा के 'मगही कहाउत में अउरत' बेस निबंध हे। फरवरी 1968 ई० बिहान 'मगही होली में देउता देवी के बरनन' डॉ० नागेश्वर शर्मा के आलोचनात्मक निबंध हे। साथ हीं रामनरेश प्रसाद वर्मा के 'मगही चइतार में सामयिक समस्या' भी आलोचनात्मक निबंध हे। अप्रिल + मई 1969 ई० 'बिहान' में डॉ० सुनीति कुमार चटर्जी के लिखल 'भारती भासा पर विदेसी परभाव' मगध किरित के 'आर्यभट्ट' खोज लेख हे। जनवरी 1992 बिहान में रमा पाण्डेय के लिखल 'चन्द्रगुप्त मौर्य के वंस' ऐतिहासिक निबंध हे। फरवरी + अप्रील 1972 ई० 'बिहान' में छपल हे मगध

किरित के निबंध 'वइदाचारी जीवक', उमेश्वर के 'मगही लोकनाट्य गीत'। मई + जुलाई 1972 ई० बिहान के अंक में मगध किरित के निबंध विद्या के पुराना केन्द्र : नालन्दा' छपल। अगस्त + सितम्बर 1972 विहान के अंक में छपल हे डॉ० विन्देश्वरी प्र० सिन्हा के ऐतिहासिक निबंध मई 1969 ई० 'विहान' में छपल आलोचनात्मक निबंध 'जनहरिनाथ कृतित्व' प्रो० वृजकिशोर पाठक, हिन्दी विभाग गणेश लाल अग्रवाल कॉलेज, डाल्टेनगंज के हे। इहे अंक में प्रो० मनेरिया के 'कलेन्डर के फोटो' वैयक्तिक निबंध छपल।

'मौर्य काल के पहिले मगध के कला' रामस्वरूप वर्मा के 'हिप्पीवाद' इहे अंक में छपल। जनवरी + अप्रील 1973 ई० बिहान में छपल रामस्वरूप वर्मा के निबंध 'धरम करम औ भगवान'। मई + जून 1973 ई० विहान में मगधकिरित के निबंध 'सिद्ध साहित्य के भासा पुरान मगही' छपल। जुलाई अगस्त 1973 विहान में डॉ० नागेश्वर शर्मा के 'पोथि पढ़ि-पढ़ि जग मुआ' ललित लेख छपल, सितम्बर 1973 ई० बिहान में कामेश्वर शर्मा 'नयन' के निबंध छपल 'संत कवि वेदनाथ भगवान'। अक्टूवर + नवम्बर 1973 बिहान में योगेश के निबंध 'दसहरा आउ सोहराय के रहस' छपल तऽ दिसम्बर 73 ई० के अंक में डॉ० रामनंदन के 'डॉ० श्रीकांत शास्त्री' झाँकी एगो जीवट छपल। ई अंक श्रीकांत शास्त्री सरधांजलि अंक। जून + जुलाई 1974 ई० बिहान में राजेश्वर पाठक 'राजेश' के निबंध' डाँढ़े डाढ़ पर उलुआ बइठल हे' आउ निर्द्वन्द्व के 'इंजन के परोपकार' छपल। नवम्बर + दिसम्बर 1974 ई० 'बिहान' में मगधकिरित के 'महावीर आउ जैन विचारधारा', कामेश्वर शर्मा 'नयन' के 'स्वामी वासुदेवाचार्य' छपल। अक्टूबर 1977 बिहान में छपल वालेश्वर सिंह के 'जितिया में तिरिया', 'हरिशंकर मिश्र' 'धारमिक पढ़ाई'। अप्रील 1978 ई० बिहान में 'रामकथा' में मगह के योगदान'–योगेश आउ मगही भासा आउ संत साहित्य'–बिन्दुबाला सिंह के निबंध उत्तम कोटि के हे। मई 1978 ई० बिहान में प्रो० रामनाथ शर्मा के निबंध आधुनिक मगही के पहिला टीकाकार: अनन्त मिश्र' हे। सितम्बर 1978 'बिहान' में प्रो० तृप्ति नारायण शर्मा के खोज निबंध छपल 'रंगमंच के हम्मर रोचक अनुभव'। अप्रील + दिसम्बर 1979 ई० बिहान में छपल श्री श्यामनंदन शास्त्री के आलोचनात्मक लेख 'वाल्मीकि आउ तुलसी के श्री राम', प्रो० तृप्तिनारायण शर्मा के हम्मर समाजी कुरीति 'बाल विवाह' छपल। प्रो० राम बुझावन सिंह के निबंध 'कपिलदेव बाबू' 'मगही लोक' में छपल। ई कपिलदेव बाबू के संस्मरन में लिखल गेल संसमरनात्मक निबंध हे। शिव प्रसाद लोहानी मगही

के अव्वल दर्जा के निबंधकार हथ। इनकर निबंध सेंगरन के पोथी 'गलवात' छपल हे। एहमें परम्परागत रीति–नीति, आधार–विचार व्यवहार, राजनीति दन्ने इसारा कैल गेल हे। 'मगही लोक' 1979 ई० में छपल 'आज के मगही कविता', डॉ० रामप्रसाद सिंह के आलोचनात्मक लेख हे। इनकर पोथी 'नव निबंध' 'ललित निबंध आ लोकसाहित्य' 'मगही के मानकरूप' में भी निबंध के कत्ते रूप बिखरल हे। विसय के अनुसार भासा–सैली में कोमलता, मोड़ आउ महीनी देखाई पड़ऽ हे। केशव प्रसाद वर्मा के गौतम' पतरिका में 1987 ई० में 'साहित्य आउ साहित्यकार' निबंध छपल। श्री मनोज कुमार के निबंध' रंगमंच के विविध रूप' 'गौतम' 1987 में छपल। डॉ० भरत सिंह के लिखल 'मगही जँतसार गीत के सौन्दर्य विधान', 'मगही सोहर के भाव सौन्दर्य, मगही में परचलित भगवती के गीत, मगही बुझौवल, मथुरा प्रसाद नवीन के काव्य में अभिव्यंजन, 'मगही गीतन में रास्ट्र प्रेम, उपेच्छित कवि श्री नन्दन शास्त्री, काजर, अज्झका मगही कविता में कल्पना, मथुरा प्रसाद नवीन के काव्य में सव्दालंकार, छपल आलोचनात्मक निबंध हे। पोथी रूप में निबंध के जे किताब छपल हे ओहमें डॉ० सम्पत्ति अर्याणी लिखल 'मगही निबंध सौरभ', प्रो० केसरी कुमार आउ डॉ० रामनन्दन से संपादित 'कलम आउ सपना', राजेन्द्र कुमार यौधेय के 'जुग के डाउट', रास बिहारी पाण्डेय के 'संपादित' मगही भासा साहित्य निबंधावली', 'मगही भासा निबंधावली' रामनरेश प्रसाद वर्मा 'चमोकन', हरिदास ज्वाल 'अमृत आउ विस', अम्बिका सिंह से संपादित' मगही साहित्यालोक', डॉ० रामकृष्ण प्रसाद मिश्र के 'अंतर मंतर घोंघा सारी', राकेश कुमार सिन्हा रवि के' 'इतिहास के ऐना में मगध', धरोहर मगध के (1–2 भाग), घमंडी राम के 'खोइंछा के चाउर', राम रतन प्र० सिंह रत्नाकर के 'मरघट के फूल', मुनिलाल सिन्हा 'सीसम' के 'तनि अइहऽ कान्हा', सरिता रंजन से संपादित 'निबंध सरिता', डॉ० दिलीप कुमार के सेंगरन' निबंध भारती', डॉ० उमेशचन्द्र मिश्र शिव' 'विचार आउ विवेचना' बड़ उपयोगी पोथी हे। एकर अलावे डॉ० चतुर्भुज के 'विभिन्न भांसा में रामकथा', अर्पणा कुमारी 'अक्षरश्रुति' के 'बड़ लोग के जिनगी से सिच्छा', आचार्य सच्चिदानंद प्रसाद के 'राम राज के न्याय', डॉ० अभिमन्यु प्रसाद मौर्य के 'मगही के धरोहर कवि रामाधार सिंह आधार', प्रो० रामनाथ शर्मा के '1857 के आन्दोलन में मग्गह के भूमिका', डॉ० गोपालशरण सिंह के 'नालन्दा विश्वविद्यालय, तब आउ अब', डॉ० राकेश कुमार सिन्हा के 'मगध के मंदिर' रामनरेश प्रसाद वर्मा के 'मगही कविता में अकाल चरचा', प्रो० लक्ष्मीचंद प्रियदर्शी के 'मगही के चलचित्र',

रामविलास रजकण के 'मगही पान', 'मगही काव्य में गजल', 'मगही लोकगीत में हास-परिहास' जादे उल्लेख करे लायक हे। 1991 ई० में डॉ० स्वर्ण किरण के 'मगही संस्कृति आउ दोसर निबंध' पोथी रूप में छपल निबंध हे। डॉ० लक्ष्मण प्रसाद सिन्हा 'मगही कविता में वियोग वरनन', 'मगही भासा आउ एकर रूप रचना', 'कंचनपुरी के भाखा रूप आउ आच्छेप', 'मगही साहित्य में वसंत', 'मगही कहानी में समाजिक चेतना' जादे दमगर हे। विष्णुदेव प्रसाद सजल के 'किल्ला', डॉ० किरण कुमारी शर्मा के 'सेनुर' वैयक्तिक निबंध हे। एन्ने हाल में श्री विष्णुदेव प्रसाद सजल आउ डॉ० भरत सिंह के संपादन में शास्त्री हंसराज के 'बदलइत तेवर', रामचन्द्र शर्मा 'किशोर' के 'मगही कविता में बरसात बरनन', डॉ० वैद्यनाथ शर्मा के 'मगही लोकगीतन में बिम्ब विधान', सूर्यनारायण शर्मा के 'हमर धरम में समता' परकास में आयल।

हरीन्द्र विद्यार्थी दैनिक अखबार में जम के मगही पर निबंध लिखलन। साल भर उपेच्छा के दंस झेलित रहल मगही (हिन्दुस्तान, 2.1.1997), मगही कविता लोक जीवन के धड़कन (नवभारत टाइम्स, 26.6.1992), मगही साहित्य ला सुखद रहल सनतानबे (आज, 30.12.1947) मगही के श्री वृद्धि के बरिस रहल 99 (आज 28.12.99), मगही के उत्कर्स के बरिस रहल 2000 (आज, 31.12.2000) आदि आलेख छपल। 2001 निरंजना में 'मगही कहानी आउ यथार्थ बोध' नामक महत्वपूर्ण निबंध छपल। भासांजलि के तहत दैनिक 'आज' में 'मगही विकास से जुड़ल सवाल (22.9.98), ध्यान खीच रहली हे (13.10.98), मन के पउधा हरिया गेल (8.12.98), डालर के पानी नियर बहा रहलन हे (19.11.99), जनता के का बिगाड़ लेवत (9.3.99), जंगल जुग के बर्बरता (13.3.99) जन्ने ताकऽ ही ओन्ने भ्रस्टाचार (16.11.99), ऊ अदमिए कइसन पसु हे पसु (7.12.99), फगुनहट के आहट (14.3.2000), मरीज से खचकल हे अस्पताल (हिन्दुस्तान, 18.2.2004) आलेख छपल उहें 'प्रभात खबर' (12.1.99) में 'झोपड़ी के बेटा' व्यंग्य परकासित भेल। मगधांचल में 'समकालीन मगही कविता' छपल। 2005 में दैनिक 'हिन्दुस्तान' में चुनाव के समय में हरीन्द्र विद्यार्थी के नौ आलेख 'हनुमान चलीसा पढ़त पोलिंग पारटी (23.1.2005), गदहो के आरती उतारल जा रहल (26.1.2005), का जनी लइका घर पहुँची कि न (30.1.2005), चुनाव के मेला हे (2.2.2005), अस्वासन आउ वादा के चउकलेट (5.2.2005), भोट के द्रोपदी के चीरहरन (11.2.2005), उड़नखटोला देव लोक के मात कइले (14.2.2005), विकास के मेमना मेमिआइयो

न सकल (19.2.2005), एक से एक तीरंदाज बइठल हथ (17.2.2005)' मगही भासा के सम्मान बढ़ौलक।

डॉ० रामनरेश मिश्र 'हंस' के 'सामागधी मूल भासा', डॉ० उमाशंकर सिंह के 'मगही एकांकी के विकास', डॉ० वासुदेवनन्दन प्रसाद के 'मग्गह के सांसकिरतिक चेतना', अयोध्या प्रसाद के निबंध मगही भासा क्षेत्र आउ ओकर सांस्कृतिक चेतना', प्रसिद्ध नारायण शर्मा के' ग्यान के इंजोरिया' निबंध सराहनीय हे।

सुभाष चन्द्र किंकर के 'मगही साहित्यकार' पद्यात्मक निबंध हे। प्राचार्य रामपारिख के लिखल 'मगही में समस्या प्रधान कहानी', प्रो० दिलीप कुमार के 'मगही पत्रकारिता के उद्‌भव आउ विकास, जनप्रियकवि सुरेश विमल, 'कहानी कला आउ कजरी', सुप्रसिद्ध जन कवि: कृष्णदेव प्रसाद जइसन आलोचनात्मक आउ समिच्छात्मक निबंध हे। मृत्युंजय कुमार के 'मगही भासा आउ साहित्य पर एक नजर', सुशील रंजन के 'मगही समराज के धुरीनगर: पाटलिपुत्र, विचित्रता में ही एकता हे' निबंध पठनीय हे। प्रो० अलखदेव प्रसाद अचल के निबंध 'मगही विकास' पर केन्द्रित हे। जगनारायण सिंह के 'कला आउ परकिरति', ओमप्रकाश सिंह के निबंध 'रजरप्पा' के सफर', 'भर फागुन बुढ़वा देवर लागे', डॉ० व्रजनंदन प्रसाद के 'दलित साहित्य', डॉ० लक्ष्मण प्रसाद 'चंद' के 'मगही भासा संस्कार', दयानंद बटोही के 'हम्मर जनमभूमि', चन्द्रभूषण मिश्र के 'परेम के घेरा' कृष्णमुरारि सिंह 'किसान' के 'मँहगाई के जगव्यापी असर', डॉ० राजदेव शर्मा के 'मगध में धरम के परतिस्ठा', डॉ० आर० इसरी के 'मगही बनाम सूफीआए कलाम', श्री गोविन्द शर्मा के 'जनसंख्या आउ पर्यावरन', तिलकधारी शर्मा के 'भारद्वाज मुनि', सरिता मिश्र के 'एगो मेहरारू के अप्पन कहानी' छपल निबंध हे। ई सब्भे निबंध में विसय के विविधता हे। एखनिन के भासा आउ सिल्प के गठन में कसावट हे। निबंध ला जे जरूरत हे ऊ सब्भे तत्व ऊपर लिखल निबंध में पावल जा हे।

घमंडी राम के सब्द चित्र संगरह 'माटी के मरम', 'माटी के सिंगार' आउ लघु कथा संगरह 'कथा बत्तीसी' काफी सराहल गेल।

अभ्यास के सवाल

1. सुमन्त के लिखक सामजिक नाटक के विवरण लिखऽ।
2. हरीन्द्र विद्यार्थी के लिखल एगो कहानी के संगरह बतावऽ।

3. हरीन्द्र विद्यार्थी रचित व्यंग परधान नाटक के बारे में लिखऽ।
4. मगही आलोचना के विकास पर अप्पन मत बतावऽ।
5. व्यख्यात्मक आलोचना केकरा कहल जा हे?
6. व्यवहारिक आलोचना केकरा कहल जा हे?
7. मगही में 'आलोचना' के सुरुआती रूप कइसे विकसित भेल?
8. आलोचना केकरा कहल जा हे? ओकर उपयोगिता पर रोसनी डालऽ।
9. आलोचना के भेद बतावऽ।
10. आलोचक के दायित्व का–का हे?
11. आलोचक में कउन–कउन गुन होना जरूरी हे?
12. कउनो तीन कवि के कविता के उदाहरन देके उनकर बिसेसता बतलावऽ।
13. नाटक, एकांकी आउ नुक्कड़ नाटक में अंतर बतावऽ।
15. कउनो एगो कहानी संच्छेप में लिखऽ।
16. कउनो एगो उपन्यास के खूबी बतलावऽ।
17. कउनो दूगो निबंध के बिसेसता बतलावऽ।
18. कउनो एगो परबंध काव्य पर परकास डालऽ।

●●●

मगही के विकास ला आन्दोलन

मगही के बढ़न्तरी खातिर जुझारू आन्दोलन चलावल गेल। अइसे तऽ मगही भासी इलाका के घर-अँगना, दूरा-दलान आउ खेत-खरिहान सगरो मगही लौकइत हल मुदा हाटो–बजार, मेला–ठेला में मगही भासी आपसी बातचीत मगहिए में करऽ हलन। 1919 ई० के आसपास अजादी के लड़ाय खनी अंगरेजी राज के विरोध में अध्यापक सत्यचंद्र सत्य विशारद 'हाय रे विदेसिया काहे ला रे हुनरवा हरले मोर' गीत गा–गा के मनेर, विक्रम इलाका में सभे मगहियन के जौर करइत रहलन। सितमगर सासक के मनमानी आउ लंपट आचरन के ओजहसे तखने गीत गावइत मगही भासा के जानदार बना रहलन हल—

"चेतू–चेतू भइया अब हिंदवा के लोग सब तहरा के पपिआ लूटल अंगरेजवा' हरिहर प्रसाद जींजल मगही में गीत लिख के सउँसे मगहवासी के जगावइत हलन। इहे कड़ी में नवादा के जयनाथ पति मोख्तार भी आन्दोलन चलावइत हलन। 1930 ई० में विदेसी लुग्गा कपड़ा के बहिस्कारला आन्दोलन छिड़ल तऽ मगही भासी गावे लगलन 'कहों टूटे न तार चरखवा चालू रहे', लखीसराय, मुंगेर, बड़हिया इलाका में घूम–घूम के मगही में भासन देवे लगलन स्वामी सहजानंद सरस्वती, कार्यानंद शर्मा, श्रीनन्दन शास्त्री। गीत भी गवाये लगल' 'सुन्नर सुभूमि भारत देसवा के गारत कैलें रे अँगरेजवा'। एतनै नयँ सउँसे मगही भासी इलाका अप्पन भासा आउ संस्कार बचावे में जुटल। रामप्रसाद सिंह 'पुण्डरीक', श्रीधर प्रसाद शर्मा, संत रामनगीना सिंह 'मगहिया' मनेर, बिहटा, विक्रम, पालीगंज, अरवल में घूम–घूम के मगही गीत गावऽ हलन आउ मगही के साहित्य पढ़ऽ, मगही में बोलऽ, मगही में लिखऽ, मगही में जीअऽ के नारा लगौले चलऽ हलन।

चाँद' आउ 'जगउनी' कृष्णदेव बाबू के लिखल गीत 1942–43 ई० के आसपास मैट्रिक इम्तिहान ला पटना विस्वविद्यालय के पद्य–सेंगरन में लगल। एकंगरसराय से चल के नूरसराय, इस्लामपुर, विहारशरीफ, नालन्दा के हर इलाका में 1943 ई० से 1945 ई० तलक श्रीकांत शास्त्री घूम–घूम के मगही ला परचार करइत हलन। इनकर स्वर में स्वर दे के हाथ मजबूत करइत हलन बदरीनाथ वर्मा।

देव नरेस के अँगना में कन्हैया लाल मिश्र (कुरका वासी) मगही झंडा फहरावइत हलन। सउँसे औरंगाबाद इलाका में घूम–घूम के ऊ मगही पसारइत हलन।

सन् 1945 ई० से 1952 तलक गाँव–गाँव मगही में लिखल गीत, परहसन के पसारे आउ ओहमें सिरजनहार के जउर करेला मगही परिषद' के मेहठा कृष्णदेव प्रसाद आउ श्रीकांत शास्त्री बड़ काम कैलन। 18 सितम्बर 1952 ई० के साँझ खनी पटना के थियोसोफिकल हाल में मगही परेमी के एगो सभा बुलावल गेल। सभा डॉ० विन्देश्वरी प्रसाद सिन्हा के सभापतित्व में भेल। ई सभा में मगही भासा आउ संस्कीरती के रच्छा आउ विकास ला मनहर आउ मजबूत कारगर उपाय पर सोचल गेल। रामगोपाल शर्मा 'रुद्र', श्री शिवनन्दन प्रसाद, एहमें जादे बढ़–चढ़ के अप्पन जोगदान देलन। उहे दिन डॉ० विन्देश्वरी प्रसाद सिन्हा सभापति, श्री राम गोपाल शर्मा 'रुद्र' उपसभापति, श्रीकांतशास्त्री मंत्री, श्री गोवर्द्धन प्रसाद सहायक मंत्री बनलन 'मगही परिसद' के। 15 नवम्बर 1952 ई० के बइठक में प्रो० सैयदअब्दुल मजीद, कपिलदेव सिंह, कृष्णदेव प्रसाद, राजाराम रस्तोगी, रामबुझावन सिंह कामकरनी समिति के सदस्य चुनल गेलन। 'मागधी' नाम से एगो पतरिका भी छपल। 6–12–52 के बैठक में श्री कृष्णदेव प्रसाद सभापतित्व कइलन। एहमें एगो साहित्यिक गोस्ठी भी भेल। 15–2–1953 के एगो बिसेस बैठक में कृष्णदेव प्रसाद 'मागधी' पतरिका वितरित कैलन। 1.3.1959 ई० थियोसोफिकल हाल, पटना में श्री कृष्णदेव प्रसाद के सभापतित्व में बैठक भेल। 2 अक्टूबर 1955 ई० के दिन आर्य कन्या उ० विद्यालय, पटना में कामकरनी समिति के बैठक बुलावल गेल। एहमें ठाकुर रामबालक सिंह, रामनारायण शास्त्री, सुरेशचन्द्र शर्मा, कपिलदेव सिंह, राजेन्द्र कुमार यौधेय, श्रीकान्त शास्त्री, रामगोपाल शर्मा 'रुद्र', शिवनन्दन प्रसाद ओगैरह हाजिर हलन आउ मगही संस्था के पुनर्गठन के बारे में अप्पन–अप्पन वेसकिमती सुझाव देलन। विचार–विमर्स के बाद तय भेल कि संस्था के नाम 'बिहार मगही मंडल' रक्खल जाय मुदा एकर साहित्यिक सभा के नाम 'मगही परिसद' ही रहे। मंत्री श्री शिवनन्दन प्रसाद सभापति, श्री विन्देश्वरी प्रसाद सिन्हा, उप सभापति श्री कपिलदेव प्रसाद, श्री कृष्णदेव प्रसाद, श्री रामगोपाल शर्मा 'रुद्र', भेलन। श्री श्रीकांत शास्त्री उप मंत्री, श्री ठाकुर रामबालक सिंह, गोवर्द्धन प्रसाद सदय संयुक्त मंत्री, लक्ष्मण प्रसाद 'दीन' आउ श्री रामेश्वरनाथ कोसाध्यच्छ के रूप में चुनल गेलन। 'मगही' नाम से पत्रिका निकासे पर विचार भेल। निर्देसक भिक्षु जगदीश कश्यप

बनलन आउ संपादन भार श्री ठाकुर रामबालक सिंह आउ श्रीकांत शास्त्री के सौंपल गेल। 'मगही' पतरिका वरिस 1 अंक 1 नवम्बर 1955 ई० में छपल। ई अंक के सलाहकार मंडल में हलन–श्री रामगोपाल शर्मा 'रुद्र', प्रो० शिवनन्दन प्रसाद, प्रो० कपिलदेव सिंह, प्रो० सम्पत्ति अर्याणी, प्रो० सिद्धेश्वर प्रसाद, श्री गोर्वद्धन प्रसाद सदय, श्री रामनरेश पाठक, श्री परमानंद दोषी। जनवरी 1955 बरिस अंक 3 'मगही' के बुद्ध जयन्ती अंक छपल। ई अंक में रूस, फ्रांस, चीन, जापान, वर्मा, लंका, थाईलैण्ड, कम्बोडिया जइसन देस के बड़का–बड़का लेखक लोग अप्पन लेख भेजलन। 5 फरवरी 1956 ई० के रोज बड़ी धूमधाम से 'दक्खिन बिहार मगही परिसद' राँची सुनामधन्य डॉ० माहेश्वरी सिंह 'महेश' के सभापतित्व में कायम भेल। जेकर नीचे लिखल अदमी अधिकारी बनलन। सभापति प्रो० केसरी प्रसाद सिंह, उप सभापति प्रो० मुरारि पाठक, मंत्री प्रो० रामनन्दन, संयुक्त मंत्री श्री भूपाल उपाध्याय आउ श्री विश्वमोहन कुमार सिंह। एकर सदस्य बनलन डॉ० माहेश्वरी प्रसाद सिंह 'महेश', प्रो० ललिता प्रसाद 'विद्यार्थी', प्रो० रामबाबू मिश्र, प्रो० प्रद्युम्न पाण्डेय, श्री कृष्ण सहाय, वकील आउ श्री विमल चरण शर्मा। ई काम में डॉ० माहेश्वरी सिंह 'महेश' आउ प्रो० रामनन्दन जेतना मेहनत कयलन ऊ सराहे काबिल हल। 8 जनवरी 1956 ई०के 'उत्तर प्रदेश मगही परिसद काशी' के उद्घाटन समारोह महापंडित राहुल सांकृत्यायन के द्वारा उनकर निवास स्थान 'नगावाँ' में साँझ खनी सुरू भेल। राहुल जी अप्पन उद्घाटन भासन देलन। एहमें श्रीनन्दनशास्त्री आ श्री जयराम सिंह विरहा आउ झूमर छंद में गीत सुनौलन। श्री युगेश्वर पाण्डेय ई सभा में मगही संगठन बनावे ला भेल कठिनाई पर अप्पन विचार रखलन। 15-11–56 के काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के थियेटर हाल में एगो बैठक भेल जेकर सभापतित्व कैलन श्री लक्ष्मण प्रसाद सिंह। श्री युगेश्वर पाण्डेय सभापति, श्री नन्दन शास्त्री उपसभापति, श्री शंकरदयाल सिंह, श्री जयराम सिंह संयुक्त मंत्री, रामचंद्र शास्त्री प्रचारमंत्री, हरध्यानी वर्मा कोसाध्यच्छ बनलन। श्री नाथुन प्रसाद सिंह आउ श्री लक्ष्मण प्रसाद सिंह कामकरनी समिति के सदस्य बनलन।

6 जनवरी 1956 के दिन एकंगरसराय (अब नालन्दा जिला) में पहिला मगही सम्मेलन भेल। खुलल अधिवेसन के उद्घाटन कैलन तखने के सिच्छा मंत्री आचार्य बदरी नाथ वर्मा आउ अध्यच्छता कैलन भिक्षु जगदीश कश्यप।

बिहार मगही मंडल, पटना मगध महोत्सव के आयोजन हिन्दी साहित्य सम्मेलन

पटना के सभागार में कैलक। एहमें 11 मई 1957 ई० के दिन डॉ० सुनीति कुमार चटर्जी, डॉ० संपूर्णानन्द, श्री राहुल सांस्कृत्यायन, भिक्षु जगदीश कश्यप अप्पन वेसकिमती उद्गार परगट कैलन। एहमें विंध्यकला मंदिर के सौजन्य से लोकसंगीत आउ लोक नृत्य के बड़ सारथक प्रस्तुति भेल। एहमें श्रीकांत शास्त्री, डॉ० रामनन्दन योगेश, सुरेन्द्र प्रसाद तरुण, जगदीशनाराण्ण चौबे, सुरेश दूबे 'सरस', रामनरेश पाठक के काव्य–पाठ सुनताहर के मन पर बेस छाप छोड़लक। एकर अलावे मृत्युंजय मिश्र करुणेश, लक्ष्मण प्रसाद दीनू के गीत भी पढ़ल गेल। ई औसर पर आचार्य शिवपूजन सहाय, श्री मोहन लाल महतो 'वियोगी', डॉ० वासुदेव उपाध्याय, डॉ० एस० ए० मजीद ओगैरह अप्पन उदगार परगट कैलन आउ धन्यवाद अरपित कैलन डॉ० वी० पी० सिन्हा।

1969–70 के आसपास गया में मगही आन्दोलन के संख फुकलन डॉ० रामप्रसाद सिंह। इनकर हर कदम पर साथ देलन रामनरेश प्रसाद वर्मा, उपेन्द्रनाथ वर्मा, जयराम सिंह, रामपुकार सिंह 'राठौर', रास बिहारी पाण्डेय, डॉ०रामनरेश मिश्र 'हंस', सूर्य नारायण शर्मा, रामविलास रजकण, शिल्पी सुरेन्द्र, श्रीकांत जैतपुरिया। श्री मिथिलेश के सपादन आउ सरगनइ में श्री मथुरा प्रसाद नवीन, परमेश्वरी, रामखेलावन शर्मा, राम रतन सिंह 'रत्नाकर' नवादा जिला के वारिसलीगंज में मगही आन्दोलन सुरू करइत 'सारथी' पतरिका भी निकासलन। इहे आन्दोलन के गति देइत हलन गिरिधर प्रसाद सुल्तानियाँ, दयानंद बटोही, लक्ष्मण चन्द, जयप्रकाश, कामरेड सियाराम शर्मा, रामरतन सिंह, श्यामसुन्दर सिंह, मुसाफिर सिंह।

2 आउ 3 मार्च 1968 के मगध सोध संस्थान, विहारशरीफ के सलियाना अधिवेसन राजगीर में भेल। पहिल दिन तीन बजे दिन से डॉ० रामनन्दन के अध्यच्छता में विचार गोस्ठी भेल। एकर उद्घाटन कैलन भारत सरकार के मंत्री श्री सिद्धेश्वर प्रसाद। एहमें डॉ० श्रीकांत शास्त्री आउ डॉ० नागेश्वर शर्मा सोध–निबंध पढ़लन। खुला अधिवेसन के उद्घाटन संत साहित्य के तत्वग्य डॉ० भुवनेश्वरनाथ मिश्र 'माधव' कयलन। ओतिए घड़ी 25 मार्च 1968 के मगही अंचल चांचपोटरी के एगो वइठकी चांचपोटरी विद्यालय (धनबाद) में भेल।ऊ औसर पर मगही अंचल चांचपोटरी के गठन भेल। अध्यच्छ श्री केदारनाथ सिंह, उपाध्यच्छ श्री रामप्रसाद सिंह, मंत्री श्री गनौरी प्रसाद कोषाध्यच्छ–श्री कपिलदेव सिंह, व्यवस्थापक श्री गिरिन्द्रनाथ मिश्र भेलन। 24 मार्च 1968 के च्यवनांचल मगही परिसद के नेउता पर

दाउदनगर से 10 मील पूरब 'देवहरा' के बगल ओला गाँव 'जैतपुर' में 'बिहार मगही मंडल' के तेरहवां अधिवेसन भेल। इहे औसर पर प्रो० केसरी कुमार कहलन ''मगही के परचार आउ परसार के मतलब हे ई भासा के रच्छा।.....लोकभासा जनमानस के उद्‌गार हे, जबतलक इनका रास्ट्र के जीवन में जगह न मिले तब तलक लोकतंत्र के कोय अरथ न हे' ई औसर पर प्रो० रामबुझावन सिंह कहलन ''मातरी भासा मगहिए से देल गेल ग्यान के पइठ बालक के मन में जल्दी हो सकऽ हे। मगही के बड़ी भारी इतिहासी महत आउ परम्परा हे बाकि आज ई थोड़ा पिछुआ गेल हे। एकरा फिनो से जगावे आउ बढ़ावे के जतन करे के चाही''। डॉ० श्रीकांत शास्त्री कहलन कि ''मगध के हाथ में विद्‌या हल आउ पीठ पर हथियार। एकर गौरव फिनो जगावे के जरूरत हे।

डॉ० रामनन्दन कहलन ई घड़ी भारत के चाणक्य आउ चन्द्रगुप्त अइसन मगहिया के जरूरत हें जे देस के एक डोरी में बान्ह सके आउ दुस्मन के खदेड़ के सीमा के रच्छा कर सके.....हमनी मगध आउ मगही के नारा बुलंद करली हे''। अप्पन अध्यच्छीय भासन में डॉ० विन्देश्वरी प्रसाद सिन्हा मगध के इतिहास आउ संस्कीरती पर जादे रोसनी डाललन।

8 मई 1968 वैसाखी पुनियां दिन मगही साहित्यकारन के एगो बइठकी सन्यास आसरम, मानपुर, गया में भेल। एकर अध्यच्छता डॉ०रामप्रसाद सिंह कैलन। ई औसर पर मगही मंडल गया जिला के गठन भेल। सभापति डॉ० रामप्रसाद सिंह, उपसभापति त्रिवेणी शर्मा सुधाकर, डॉ० महेश नारायण, मंत्री रामविलास रजकण, उपमंत्री श्रीकांत जैतपुरिया चुनल गेलन। सदस्य रूप में डॉ० ब्रजअमोहन पाण्डेय 'नलिन', जनकनन्दन प्रसाद सिंह 'जनक', रामनरेश नाहर, ललन शर्मा 'मधुकर', दशई सिंह के चुनाव भेल। 2 मई 1969 ई० के ही जम्होर में बिहार मगही मंडल के चउदहवाँ अधिवेसन भेल। रघुवंश कुमार सिंह अप्पन स्वागत भासन पढ़लन। एकरा बाद मंडल के मंत्री कपिलदेव सिंह सलियाना लेख पढ़ के सुनयलन।

प्रो० रामनन्दन, प्रो० तृप्ति नारायण शर्मा, प्रो० केसरी कुमार के सरगनइ में 23-2-79 के दिन सिच्छा मंत्री भिजुन मगही अकादमी गठन ला स्मार पत्र सौंपल गेल। एकर बाद दोसर स्मार पत्र वित्र मंत्री, बिहार सरकार, पटना के हाथ में बिहार मगही मंडल के तरफ से मगही अकादमी के गठन ला देल गेल।

23 अप्रील 1956 ई० के पटना जिला के विलारी गाँव पो० वारसलीगंज में स्थानीय सिद्ध स्थान 'काव्य निकेतन' में गाँव के नवयुवक सब के एगो बैठक भेल। सुरेश दूबे 'सरस' धारन देलथिन। उहँय 'श्री मगध पुस्तकालय' आउ 'मगही संघ' स्थापित भेल। निर्देसक हलन–श्री सुरेश दूबे 'सरस', सचिव श्री श्याम सुन्दर सिंह आउ सदस्य हलन–श्री लक्ष्मण मिश्र 'मधुर', श्री रामाधार सिंह 'उन्मुक्त', विसन चौधरी, रामोतार मिश्र, भूपेन्द्र सिंह, यदुनंदन सिंह, मुहम्मद ईशाक खाँ।

1957 ई० में उत्तरप्रदेस मगही परिसद, काशी एगो अखिल भारतीय लोकभासा सम्मेलन के आयोजन कैलक। एहमें श्री नन्दन शास्त्री 'गरदा से लेटल अकास हो तरेगना उदास हौ भिंजल हौ सखी मोर अँखिया' गीत गा के स्वरन पदक आउ जयराम सिंह 'बदरिया गावऽ हइ कजरिया झूम गगन के अँगना' गीत गा के रजत पदक पाके मगही आन्दोलन करताहर के पगड़ी ऊँचा कर देलन। 1958 से 1967 तक मगही आन्दोलन संगठन मजगूत करे में हाथ बँटौलन रामनरेश तिवारी, श्याम बिहारी प्रसाद सिन्हा, पुष्पा अर्याणी, योगेश्वर प्रसाद सिंह' योगेश', लाला ठाकुर प्रसाद, हरिश्चन्द्र प्रियदर्शी, श्री श्यामनन्दन शास्त्री, कुमारी राधा, श्रीमती जया देवी ठाकुर, धरमदेव सिंह, रामचंद शर्मा 'किशोर', मथुरा प्रसाद आदि।

26 मई 1964 ई० के साँझ साढ़े छौ बजे पटना कॉलेज के न्यू जिमनाजियम भवन में मगध महोत्सव मनावल गेल। एकर अध्यच्छता मगध विस्वविद्यालय के कुलपति डॉ० कालीकिंकर दत्त कयलन आउ भूतपूर्व सिच्छा मंत्री आचार्य वदरीनाथ वर्मा खास अतिथि हलन। ई औसर पर मगध के साहित्यिक, सांस्कीरतिक ऐतिहासिक गौरव पर नामी-गिरामी लोग के भासन भेल। अंत में लोकभासा कवि सम्मेलन के अध्यच्छता हिन्दी–मैथिली के नामी कवि, लेखक नागार्जुन कयलन। ई औसर पर 'मगध सोध संस्थान' के उद्घाटन भी डॉ० कालीकिंकर दत्त कयलन।

15 मई 1965 ई० के साँझ 19वाँ बिहार मगही मंडल के तत्वावधान में बुद्ध जयन्ती के औसर पर गया के थियोसोफिकल मॉडेल स्कूल के सभागार में मगध महोत्सव मनावल गेल। एकर सभापतित्व कयलन डॉ० कामेश्वर प्रसाद अम्बष्ठ। गया के प्राचार्य डॉ० कामेश्वर प्रसाद अम्बष्ठ आयल लोग के स्वागत कयलन। गया कॉलेज के हिन्दी विभागाध्यच्छ डॉ० वासुदेवनन्दन प्रसाद कहलन कि अब तक हम मगही में लिखे पढ़े के विरोधी हली बाकि अब एकर महातम समझ गेली हे आउ हम भी एकरा में लिखे पढ़े आउ सोध करे में अप्पन जोग देम। गया कॉलेज, गया

क हिन्दी विभाग के श्री श्यामनन्दन सिह मगही लोक साहित्य के माधुरी पर परकास डाललन। अंत में श्री पन्ना लाल महतो के सभापतित्व में एगो कवि सम्मेलन भेल जेकरा में त्रिलोकी नाथ सहाय, त्रिवेणी शर्मा सुधाकर, रामविलास रजकण, देवकीनन्दन प्र० सिंह, रामनन्दन, नारायण लाल कटरियार, गोपाल मिजुआर,' पं० भागवत मिश्र आउ दशरथ लाल पसेरा अप्पन मगही काव्य सुनौलन।

20.2.66 के दिन बिहार मगही मंडल, पटना के बइठकी पटना विश्वविद्यालय के प्राचीन भारतीय इतिहास आउ पुरातत्व विभाग के पुस्तकालय में बोलावल गेल। एहमें डॉ० श्रीकांत शास्त्री, रामनरेश पाठक, श्री सुरेश दूबे 'सरस' आउ डॉ० रामनन्दन के सहजोग से आकाशवाणी पटना में मगही कार्जक्रम प्रसारन ला स्मार पत्र तइयार भेल आउ 20 मार्च 1966 के ई स्मार पत्र निदेसक आकाशवाणी पटना के सौंपल गेल। एकरा लागू करावे ला रामगोपाल शर्मा रुद्र के भार देल गेल। 23/4/1966 ई० के दिन मगही परिसद जमशेदपुर के प्रो० आशुतोष कुमार चौधरी के सरगनइ में बइठक भेल। सर्व सम्मति से परस्ताव पारित भेल कि मगही भासा के साहित्य एकेडमी आउ मगध विस्वविद्यालय में मान्यता मिले। अंत में धन्यवाद अरपित कयलन छोटानागपुर के मगही भासी प्रो० जोली भूषण तिर्की।

11 जून 1967 ई० के सिंहभूम जिला के मगही भासी के एगो बइठक मगही साहित्य परिसद, जमशेदपुर में भेल। अध्यच्छता कयलन प्रो० आशुतोष कुमार चौधरी, तय भेल कि जिला स्तर पर मगही संगठन बनावऽ आउ मगही समाज बचावऽ।

भारतीय मगही मंडल, विक्रम, पटना के गठन 26–1–1971 के भेल। एकर निबंधन 10.11.71 सं. 41 से भेल। पहिला सलियाना ममारोह 26–1–1972 के कैल गेल। महीपति नारायण सिंह के स्वागत भासन से 29–12–73 ई० पहिला अधिवेसन विक्रम में भेल। एकर संयोजक संत रामनगीना सिंह 'मगहिया' हलन। दोसर अधिवेसन 16–4–1975 ई० नौबतपुर में भेल। संयोजक विन्देश्वरी प्रसाद सिंह 'विन्दु' हलन आउ स्वागताध्यच्छ श्री जयनारायण सिंह। तेसर अधिवेसन 15–4–76 ई० के विक्रम में भेल। संयोजक श्री राघवेन्द्रधारी सिंह, उद्घाटन करताहर श्री शंकरदयाल सिंह हलन। चउथा अधिवेशन दहपर सरगाँव विहारशरीफ' नालन्दा में 14–5–77 के भेल। संयोजक श्री शिवचन्द्र शर्मा, स्वागताध्यक्ष श्री तारकेश्वर भारती, उद्घाटनकरता प्रो० केसरी कुमार हलन।

मगही के विकास ला हर हमेसे मगहिया भाई लोग सजग रहलन हे। 23–11–78 से 26–11–78 तक बोधगया से नालन्दा तलक पैदल मगही जागरन जतरा भेल। डॉ० रामप्रसाद सिंह, रासविहारी पाण्डेय, रामदेव मेहता, जनकनन्दन सिंह जनक', रामनरेश प्रसाद वर्मा मिलजुल के एकरा सफल बनौलन। योगेश, हरीन्द्र विद्यार्थी, शेषानंद मधुकर, हरिदास ज्वाल, रामनरेश मिश्र हंस', रामविलास रजकण, श्रीकांत जैतपुरिया, रामाशीष सिंह, रामनारायण वर्मा, राधाकृष्ण राय, रामनाथ सिंह, डॉ० सरयू प्रसाद, श्री नन्दन शास्त्री, प्रो० लक्ष्मण चंद, भारत भारद्वाज, सुरेन्द्र प्रसाद तरुण, जयराम सिंह, दशई सिंह, स्वर्णकिरण, बलिराम पाण्डेय, प्रो० परमेश्वर दयाल, तारकेश्वर भारती, रामचंद्र अदीप, आर. ईसरी अरसद, अयोध्या नाथ शाण्डिल्य मिल-जुल के ई जागरण जत्था के सफल बनौलन।

23 फरवरी 1974 ई० पटना के कॉलेज आ विश्वविद्यालय विभाग सब में पढ़ताहर आउ पढौताहर लोग के एगो सम्मेलन के संयोजक हलन श्री रामजतन सिंह (पूर्व अध्यक्ष छात्र संघ)। एहमें भासन देलन मगही में डॉ० कामेश्वर प्रसाद अम्बष्ट' प्रो० पद्मदेव नारायण शर्मा, डॉ० रामजी सिंह, डॉ० रामनन्दन; प्रो० कपिलदेव सिंह, प्रो० केसरी कुमार, प्रो० अर्जुन सिंह, डॉ० श्यामनंदन शास्त्री, प्रो० सुरेश नन्दन प्रसाद। एकर अलावे लक्ष्मी पुस्तकालय के मालिक परमेश्वर प्रसाद भी भासन देलन।

2 अगस्त 1977 ई० के दिन मगही परेमी आउ साहित्यकारन के एगो बड़गो विराट सभा में मगही अकादमी गया के जनम भेल। इहाँ से मगही के बढ़न्ती आउ विकास ला चउगिरदी धारा फूटल। अकादमी गठन के बाद 24–9–1977 के श्री मन्नुलाल पुसतकालय, गया में एकर कामकरनी समिति के बैठक भेल। निरनय लेल गेल कि डॉ० राम प्रसाद सिंह के संपादन में अकादमी एगो पतरिका निकालत। तहिया से 'मगही लोक', 'मगही समाज' पतरिका मगही भासा, साहित्य आउ संस्कीरती के सेवा खातिर निकसइत हे। 6-11-77 के मगही अकादमी गया के कामकरनी समिति के फैसला मुताविक एगो नया संस्था जनम लेलक 'अखिल भारतीय मगही साहित्य सम्मेलन'।

अप्रील 1978 ई० में मगही अकादमी के तत्वावधान में स्यालडीह हजारीबाग में मगही साहित्यकारन के सम्मेलन भेल। 10–12–1978 के अप्पन काम करनी समिति के बैठक में निरनय भेल कि 4 मार्च 1979 ई० के दिन एकर दोसरका सलियाना समारोह मनावल जाय। गया के जवाहर टाउन हाल में एकर अध्यच्छता

कैलन बिहार के पूर्व राजस्व मंत्री श्री उपेन्द्रनाथ वर्मा आउ उद्घाटन कैलन हिन्दी के वयोवृद्ध कवि श्री मोहन लाल महतो 'वियोगी'।

सन् 1975 ई० में वजीरगंज में मगही विकास परिसद नाम से एगो संस्था के जनम भेल। एकर अध्यच्छ हलन वजीरगंज उ० वि० के प्रधानाध्यापक आउ मीरगंज वासी श्री राजेन्द्र प्रसाद सिंह, सचिव राधाकृष्ण राय। जयराम सिंह, रामपुकार सिंह 'राठौर', रामनाथ सिंह, कमला सिंह ई संस्था के मजबूत पाया बनलन। गया नगर में मगही प्रचारिनी सभा के गठन 1977 ई० में भेल।

एकर अध्यच्छ हलन गया नगर वासी (खटाँगी कोठी) कला-साहित्य प्रेमी उमेश्वर देव नारायण प्रसाद सिंह। ई संस्था समय-समय पर मगही वार्ता, गोस्ठी, कवि सम्मेलन, अखरा' पत्रिका के संपादन, मगध विस्वविद्यालय में मगही पढ़ाई के आन्दोलन करइत रहल। मगही प्रचारिनी सभा गया में तन-मन-धन से सहजोग कैलन मणिलाल आत्मज, रामकृष्ण मिश्र, विश्वनाथ, ब्रजमोहन पण्डेय नलिन', डॉ० भरत सिंह, डॉ० सच्चिदानन्द प्रेमी आउ गोवर्द्धन प्रसाद सदय।

6 अप्रील 1985 ई० के मगही अकादमी गया के पाँचवा अधिवेसन मनावल गेल। अठारह सदस्यीय स्वागत समिति बनल। ओतिए घड़ी 'डॉ० रामप्रसाद सिंह साहित्य पुरस्कार' देवे के बात पारित भेल। ई औसर पर 'मगही लोक' सोध पतरिका के अंक निकसल। एहमें 'डॉ० रामप्रसाद सिंह, डॉ० सम्पत्ति अर्याणी, प्रो० रामबुझावन सिंह, तारकेश्वर भारती, प्रो० जयनाथ कवि, प्रो० भरत सिंह, रामकृत महतो, उमेशचन्द्र मिश्र, डॉ० स्वर्ण किरण, प्रो० रामदास कवि, नरेन्द्र वर्मा, रामदेव मेहता मुकुल, मदन मोहन प्रसाद, इन्द्रदेव दिवाकीर्ति, सुखदेवलाल मेहता, डॉ० रामनरेश मिश्र हंस, रामविलास रजकण, प्रो० रामनरेश प्रसाद वर्मा, कुमार इन्द्रदेव, जनकनन्दन सिंह 'जनक' के रचना छपल।

2, 3, मई 1987 ई० के दिन भारतीय मगही मंडल, विक्रम, पटना के दसवाँ अधिवेसन मालतीधारी कॉलेज, नौबतपुर में भेल। एहमें अध्यच्छ के रूप में डॉ० रामचंद्र प्रसाद (अँगेजी विभागाध्यच्छ पटना विस्व०) उपाध्यच्छ प्रो० दशई सिंह, डॉ० श्यामनन्दन शास्त्री 'हंसराज', मंत्री रामाधार सिंह आधार, उपमंत्री प्रो० भरत सिंह संयुक्त मंत्री सिद्धनाथ शर्मा हलन।

आन्दोलन के अगला कड़ी में अइसन जागृति आयल कि सब्भे परखंड के मुख्यद्वार पर धरना पड़े लगल। मसौढ़ी परखंड में श्याम नारायण पटेल, हरीन्द्र

विद्यार्थी, शिवदनी शर्मा, विक्रम परखड में संतरामनगीना सिंह मगहिया, रामसनेही सिंह सनेही, रामाधार सिंह आधार, नौबतपुर परखंड में शशिभूषण उपाध्याय मधुकर, विन्देश्वरी सिंह विन्दु, विहटा में प्रो० रामनाथ शर्मा, अर्जुन प्र० सिंह, हसुआ में डॉ० भरत सिंह, दीनबंधु, वारसलीगंज में मिथिलेश, नवादा में जयप्रकाश, विहारशरीफ में डॉ० आर इसरी असरद, हरिश्चन्द्र प्रियदर्शी, प्रो० दशई सिंह, सोहसराय में डॉ० स्वर्ण किरण, नूरसराय में शिवप्रसाद लोहानी, इस्लामपुर में बाबूलाल मधुकर, वजीरगंज में जयराम सिंह धरना कार्जक्रम में भाग लेलन।

25.12.80 के नौबतपुर में भारतीय मगही मंडल छठा अधिवेसन आयोजित कैलक। एकर संयोजक श्री रामनरेश शर्मा, रामेश्वर प्रसाद मिश्र हलन। उद्घाटन कैलन श्रुतिदेव शास्त्री, बिहार रास्ट्रभासा परिसद, पटना। 7–1–1978 सलियाना समारोह शिवगढ़, विक्रम में भेल। संयोजक हलन–संतरामनगीना सिंह मगहिया आउ उद्घाटन कैलन कैलाशपति मिश्र, वित्त मंत्री, बिहार सरकार, पटना। एकरा में सहजोगी हलन श्री सुभाषचन्द्र किंकर, रामाधार सिंह 'आधार', रामबली शर्मा 'कंज' डॉ० सुरेश प्रसाद विमल, यमुना प्रसाद, प्रो० छोटे नारायण सिंह, चतुरानन्द मिश्र चतुरा', रंगीला सिंह, प्रो० तृप्तिनारायण शर्मा, प्रो० रामनाथ शर्मा, संत प्रसाद गुप्त, सम्पत्ति अर्याणी, इन्दु कुमारी, धनमन्ती देवी, प्रो० भरत सिंह, प्रो० रामप्रवेश शर्मा।

मगही के मगध विश्वविद्यालय, बोधगया के स्नातक सामान्य षाठ्यक्रम में लागू करावे खातिर 1982 ई० के नवम्बर महीना में डॉ० वासुदेव नन्दन प्रसाद के सरगनइ में डॉ० भरत सिंह, डॉ० मिथिलेश, प्रो० जयनाथ कवि के एगो प्रतिनिधि मंडल कुलपति से मिलल। ई आन्दोलन के रूप धरलेत अइसन सोच समझ के तखने के कुलपति एफ० अहमद मगही पढ़ावे ला आदेस देलन। ई माँग में डॉ० रामप्रसाद सिंह, डॉ० सम्पत्ति अर्याणी, प्रो० रामनरेश प्रसाद वर्मा, डॉ० नलिन भी साथ देलन।

24 मार्च 1984 ई० के अखिल भारतीय मगही भासा सम्मेलन के तत्वावधान में मगही के प्रमुख साहित्यकारन के सिस्टमंउल इंटरमीडिएट से इंटर स्तर में मगही पढ़ावे ला निहोरा कैलक। श्री नन्दन शास्त्री, योगेश्वर प्रसाद सिंह योगेश, रास बिहारी पाण्डेय, रामनरेश प्रसाद वर्मा, उमेश्वर, प्रभात वर्मा ई सिस्टमंडल में भाग लेलन।

1985 में डॉ० भरत सिंह, डॉ० शिवराम यादव, प्रो० जयनाथ कवि, डॉ० रामप्रसाद सिंह, प्रो० रामनरेश प्रसाद वर्मा, डॉ० ब्रजमोहन पाण्डेय 'नलिन' के लिखित माँग कैला पर ओतिए घड़ी हिन्दी विभागाध्यच्छ डॉ० पूर्णमासी राय 'मगही'

आनर्स पढ़ावे ला अनुसंसा कैलन। डी. एन. कॉलेज मसौढ़ी में सबसे पहिले मगही आनर्स के पढ़ाई सुरू भेल। मगही आनर्स के पहिला छात्र दुलारचन्द यादव हथ। 2 सितम्बर 1985 ई० के. बी. डी. इवनिंग कॉलेज, पटना में मगही विभाग डॉ० सत्येन्द्र कुमार सिंह के परयास से खुलल। एकसरुआ मगही परध्यायक के रूप में ई काम कैलन।

26 दिसम्बर 1990 के मगही साहित्यकार कलाकार परिवार के तरफ से मगही के उपेच्छा पर गहरा चिन्ता प्रकट करइत महासचिव हरीन्द्र विद्यार्थी सरकार से माँग कैलन कि बिहार के सब्हे विस्वविद्यालय में मगही पढ़ावल जाय। 28 जनवरी 1998 ई० के बिहार मगही मंडल पटना के तरफ से डॉ० रामनन्दन के अगुआई में डॉ० युवराजदेव, डॉ० भरत सिंह, श्री नन्दन शास्त्री, सतीश कुमार मिश्र, एगो स्मार पत्र सौंपलन पटना विश्वविद्यालय के कुलपति भिजुन मगही पढ़ावे खातिर। 22 फरवरी 1999 ई० के कुमारी राधा के डेरा पर मगही साहित्यकार कलाकार परिवार के बैठक भेल। सतीश कुमार मिश्र, घमंडी राम, हरोन्द्र विद्यार्थी, राजकुमार प्रेमी, रामगोविन्द यादव, डॉ० अभिमन्यु प्रसाद मौर्य एहमें भाग लेलन। कुमारी राधा के अध्यच्छता में सब्हे लोग एगो स्मार पटना वि० वि० में मगही पढ़ावे ला सौंपलन। 22 जून 2000 ई० के पटना विश्वविद्यालय के गेट पर धरना भेल। एहमें हरीन्द्र विद्यार्थी डॉ० अभिमन्यु प्र० मौर्य, चन्द प्रकाश माया, घमंडी राम, राजकुमार प्रेमी, मनोज कुमार भाग लेलन। अखिल भारतीय मगही साहित्य सम्मेलन के तत्वावधान में 10.7.2001 के मगही साहित्यकार हरीन्द्र विद्यार्थी, डॉ० सत्येन्द्र कुमार सिंह आउ गौतम विन्ध्य पुत्र के तीन सदस्यीय प्रतिनिधि मंडल मगध वि० वि० के कुलपति बी.एन. रावत से मिलके M.A. में मगही के पढ़ाई सुरू करेला ग्यापन देलक।

श्री द्वारिका सुन्दरानी आउ डॉ० भरत सिंह के अथक परयास से बोधगया में एगो मगही भासा के कार्जसाला 10–9–1991 ई० के आयोजित भेल। एहमें 6 साल से 19 बरिस के बुतरुन ला अनौपचारिक सिच्छा के जरिए मगही भासा के सुत्थर सरस पाठ्यक्रम बनल आउ पाठ्य सामग्री के अधार मजबूत बनावे में भाग लेलन रामनरेश पाठक, रामचन्द्र शर्मा किशोर, अनिल विभाकर, शेखर, करुणेश, डॉ० रामकृष्णा मिश्र, मिथिलेश, वैकुण्ठ पाण्डेय, डॉ० चंचला कुमारी। अबहियो श्री द्वारिका सुन्दरानी के परयास से समन्वय आश्रम बोधगया के मारफत चलेओला दू सौ केन्द्र में मगही पढ़ावल जाइत हे। पाठ्य सामग्री आसरम में ही लोग तइयार करऽ

हथ। रामपुकार सिंह, रमेश मिश्र, डॉ० भरत सिंह, गोवर्द्धन प्रसाद सदय, सरयू प्रसाद के सहजोग से द्वारिका सुन्दरानी समय-समय पर अनौपचारिक केन्द्र ला मगही पाठ्य सामग्री बनवाइत रहऽहथ। 1 जून 1995 ई० के गोवर्द्धन प्रसाद सदय, डॉ० नलिन, डॉ० सच्चिदानन्द प्रेमी, डॉ० भरतसिंह मगध विस्वविद्यालय बोधगया में मगही एम.ए. में पढ़ावे खातिर कुलपति न्यायमूर्त्ति सुरेश चन्द्र मुखर्जी के सामने माँग पत्र रखलन। डॉ० राजदेव शर्मा, मणिलाल आत्मज, गोवर्द्धन प्रसाद सदय के एगो सिस्टमंउल हिन्दी विभागाध्यच्छ डॉ० लक्ष्मण प्रसाद सिन्हा से मिलके मगध में एम.ए. मगही पढ़ावेला माँग कइलक। एम.ए. मगही के पढ़ाई के माँग अखबार के माध्यम से करित रहलन श्री दुलारचंद यादव, श्री लालदेव प्रसाद, डॉ० कृष्णनंदन यादव।

19 फरवरी 2004 ई० के 'मगही बचाओ अभियान समिति' के तत्वावधान में पटना विस्वविद्यालय के गेट पर दिन भर धरना देल गेल। तैंतीस साहित्यकार धरना में बइठलन। हरीन्द्र विद्यार्थी, डॉ० रामप्रसाद सिंह, उमाशंकर सिंह, डॉ० बी. एस. लाल, चन्द्र प्रकाश माया, रामपुकार कुशवाहा, शिवप्रसाद लोहानी, अरुण कुमार गौतम एहमें प्रमुख नाम हे। धरना स्थल पर पटना विस्वविद्यालय के कुलानुसासक डॉ० कृतेश्वर प्रसाद अयलन आउ धरनार्थी लोग के साथ सद्भावपूर्ण व्यवहार कैलन आउ मगही बचाओ अभियान समिति के सचिव घमंडी राम के पत्र पर कैल गेल कार्जवाही ला के देखौलन। हरीन्द्र विद्यार्थी, घमंडी राम, डॉ० सत्येन्द्र कुमार सिंह, के सत्प्रयास से नालन्दा खुलविश्वविद्यालय में मगही एम. ए. के पढ़ाई सुरू भेल। एकरा ला कुलपति विजयशंकर दूबे आउ समन्वयक श्री पी. सी. पाण्डेय धन्यवाद के पात्र हथ। पटना विश्वविद्यालय में हिन्दी विभागाध्यच्छ डॉ० दिनेश प्रसाद सिंह से घमंडीराम, हरीन्द्र विद्यार्थी, अभिमन्यु मौर्य मिलके मगही पाठ्यक्रम ला जानकारी लेलन।

दिसम्बर 2005 ई० में श्री घमण्डी राम, हरेन्द्र विद्यार्थी के सत्प्रयास से डॉ० सत्येन्द्र कुमार सिंह मगही आंदोलन से जुड़ल फाइल लोकसभा आउ राज्य सभा में सवाल उठावे खातिर दिल्ली ले गेलन। लोकसभा में अवाज उठावेला विजय कृष्ण, बाढ़ सांसद आउ राज्य सभा में अवाज उठावेला डॉ० फगुनी राम के स्मार पत्र सौंपल गेल। तद्युगीन शिच्छा राज्य मंत्री डॉ० संजय पासवान, रेल मंत्री श्री नीतीश कुमार के भी एक सौ पाँच पेज के स्मार पत्र सौंपल गेल।

9 अप्रील 1996 ई० के दिन संयास आसरम, मानपुर गया में 45 वॉ सलियाना अधिवेसन बिहार मगही मंडल, पटना के बोलावल गेल। एकर सब्भे सरेजाम कयलन

डॉ० भरत सिंह। स्वागताध्यच्छ हलन डॉ० राजदेव शर्मा। ई औसर पर एगो स्मारिका भी छपल जेहमें श्री रामनरेश प्रसांद वर्मा के मगही के प्रबंध काव्य, डॉ० राजदेव शर्मा के मगध के सांस्कीरतिक महातम, डॉ० रामनन्दन के 'सोनवरनी वँसुली', डॉ० रामसिंहासन सिंह के 'मगध के सांस्कृतिक अधार', श्री राधाकृष्ण राय के 'मगही आन्दोलन आउ गया जी', डॉ० रामप्रवेश सिंह के 'भूगोल के नजर में गया' जइसन गद्यात्मक लेख छपल। एहमें श्री मिथिलेश, डॉ० देवनन्दन विकल, श्री योगेश, डॉ० नरेशप्रसाद वर्मा, रामपुकार सिंह राठौर, डॉ० जयराम सिंह, प्रो० लक्ष्मीचन्द्र प्रियदर्शी, डॉ० ब्रजमोहन पाण्डेय नलिन, गोवर्द्धन प्रसाद सदय के गीत, गजल, कविता छपल। ई औसर पर बिहार के कोना–कोना से मगही कवि, कलाकार, गीतकार भाग लेलन। ई अधिवेसन में डॉ० रामनन्दन, डॉ० युवराजदेव प्रसाद, प्रो० तृप्तिनारायण शर्मा, रामचन्द्र शर्मा 'किशोर', रामनरेश पाठक, कुमारी राधा, कन्हैयालाल मेहरवार के भूमिका बड़ सराहनीय हल।

हरीन्द्र विद्यार्थी साहित्य अकादमी, नई दिल्ली के सचिव के पत्र लिखके मगही के भासा के रूप में मान्यता देवे आउ मगही साहित्यकार के भी पुरस्कृत आउ सम्मानित करे के माँग कइलन। जेकर जवाब 27 नवम्बर 2000 के आयल।

शेखपुरा मगही मंडल के 2001 ई० से 2007 ई० तलक पचासो दफे बइठक भेल। संविधान के अठवाँ सूची में मगही ला माँग उठल। पहिला कलास से दसवाँ तलक मगही पढ़ावल जाय, जनगनना में मगही के स्थान देल जाय, साहित्य अकादमी, दिल्ली मगही के भासा रूप में मान्यता देवे, एकर ई इलाका में माँग करइत रहलन श्री रामचन्द्र सिंह, जयनन्दन सिंह, घमंडी राम, राम भजन शर्मा बटोही, आनंदवर्धन, मिथिलेश, लालमणि विक्रांत, परमेश्वरी, दयानंद शर्मा, राजेश्वर नारायण सिंह, रामजी सिंह, डॉ० किरण कुमारी शर्मा, डॉ० श्री विष्णुदेव प्रसाद सजल आउ श्री मिथिलेश जी के अगुआई में। एहमें नीचे से ऊपर के कलास तक मगही पढ़ावल जाय, लोक सेवा आयोग में मगही लागू होवे के माँग उठइत रहल। ई सभा के संबोधित कैलन श्री नवल किशोर यादव (पार्सद, विधान परिसद, पटना) श्री घमंडी राम, डॉ० भरत सिंह, परमानंद, मिथिलेश, विष्णुदेव प्रसाद सजल, शंभु विश्वकर्मा, गोपाल निर्दोष, अशोक समदर्शी, डॉ० संजय कुमार दीनबंधु, परमेश्वरी, जयराम देवसपुरी, कारू गोप, जयप्रकाश, ओंकार मिश्र निराला आउ ऋतु कुमारी।

अगस्त 2006 में एगो प्रतिनिधि मंडल बिहार के मुख्य मंत्री से मिलल आउ माँग कैलक–संविधान के अठवाँ अनुसूची में मगही सामिल करेला परस्ताव विधान

मंडल से पास करके केन्द्र मरकार के पास भेजल जाय। साहित्य अकादमी दिल्ली मगही के भासा रूप में मान्यता देवे। मगही के पढ़ाई प्राथमिक से मैट्रिक तलक मगही भासी इलाका में कैल जाय। प्रतिनिधि मंडल में सामिल हलन–हरीन्द्र विद्यार्थी, डॉ० अभिमन्यु प्रसाद मौर्य, डॉ० सत्येन्द्र कुमार सिंह, सिद्धेश्वर, अरुण कुमार गौतम। मुख्यमंत्री श्री नीतीश कुमार ई माँग पर सुहानुभूति पूर्वक विचार करे के आस्वासन देलन।

26.3.2007 मगही बचाओ अभियान समिति, पटना, मगही अकादमी गया मगही मंडप, नवादा, मगही विकास मंच, जहानाबाद, बिहार मगही मंडल, पटना आ अखिल भारतीय मगही साहित्य सम्मेलन, पटना के मिललजुलल परयास से मगध विस्वविद्यालय बोधगया के परसासनिक भवन भिजुन एगो बड़गो धरना के आयोजन



कैल गेल जेकर संचालन एकाएकी घमंडी राम, डॉ० भरतसिंह, प्रो० दिलीप कुमार आउ प्रो० जयनाथ कवि कयलन। डॉ० रामप्रसाद सिंह अध्यच्छता में भेल ई धरना के मुख्य माँग हल कि मगध विस्वविद्यालय बोधगया में हाली से मगही एम. ए. के पढ़ाई सुरू होवे के चाही आउ मगध विस्वविद्यालय के सभे कॉलेज में बी. ए. स्तर तलक मगही पढ़ावे के इंतजाम होवे के चाही। एगो प्रतिनिध मंडल कुलपति डॉ० बी.



एन. पाण्डेय से मिलल जेहमें डॉ० रामप्रसाद सिंह, डॉ० भरत सिंह, डॉ० कृष्णनन्दन यादव, दिलीप कुमार आउ श्री हरीन्द्र विद्यार्थी हलन। कुलपति महोदय प्रतिनिधि मंडल के आस्वासन देलन कि जुलाई 2007 से मगही के पढ़ाई एम. . ए. स्तर में सुरू होत। धरना में सामिल होवे ओला में ढेरो मगही परेमी, सिच्छाविद, साहित्यकार हलन। एहमें खास नाम हे श्री जगन्नाथ सिंह, रामवृक्ष महाजन, मिथिलेश, कृष्णचंद्र चौधरी, सरयू प्रसाद, परमेश्वरी, दीनबंधु, डॉ० उमाशंकर सिंह 'सुमन', पवनतनय, वासुदेव प्रसाद, मुन्द्रिका सिंह, राजदेव सिंह, अमर अलंकृत, अरविन्द कुमार ऑजास, डॉ० वी. एस. लाल, राजकुमार प्रेमी, प्रो० रामकेश्वर प्रसाद यादव, डा. ए. रहमान, प्रो. शभुनाथ सिन्हा, लोहड़ी ठाकुर, अरविन्द कुमार, प्रो. वलिराम यादव, प्रो० राम सकल बिन्द, प्रो० राजेन्द्र प्रसाद सिंह, प्रो० सुनील कुमार, प्रो० जितेन्द्र वत्स, दीनबंधु, प्रो० रामाधार सिंह, प्रो० शैलेश कुमार पंकज, डॉ० सोमनाथ प्रसाद, प्रो. अरविन्द सिंह चौधरी, डॉ. महेश कुमार शरण, प्रो० कुमार राकेश कानन, डॉ० शैलेन्द्र कुमार, प्रो० शाहिद रिजवी, डॉ० संजय कुमार, प्रो० श्री निवास शर्मा ओगैरह।

6 अगस्त 2007 ई० के मगही बचाओ आन्दोलन समिति, मगही भासा–भासी समन्वय समिति आउ बिहार मगही मंडल के संयुक्त तत्वावधान में साहित्य

अकादमी, दिल्ली के गेट भिजुन एक दिवसीय धरना देल गेल। धरना सभा के अध्यच्छता विष्णुदेव प्रसाद सजल आउ संचालन डॉ० भरत सिंह कैलन। मुख्य वक्ता बिहार विधान परिसद के सदस्य डॉ० रामवचन राय कहलन कि मगही पूर्वी भारत के सब्भे भासा के जननी हे। ऊ साहित्य अकादमी दिल्ली से मगही संबंधी सब्भे माँग पूरा करे के अपील कैलन। सभा के संबोधित करइत घमंडी राम, राजकुमार प्रेमी, आनन्दवर्धन, डॉ० किरण कुमारी शर्मा कहलन कि मगही अप्पन मान्यता पावे जोग सब्भे मानदंड पूरा करऽ हे। मगही के संविधान के अठवाँ अनुसूची में सामिल कैल जाय, साहित्य अकादमी मगही के भासा के दर्जा देवे, संघलोक सेवा आयोग इम्तहान में आउ केन्द्रीय शैच्छिक संस्थान में मगही के स्थान देल जाय मांग जादे जोर पकड़लक। ई मांग पत्र सौंपलन हरीन्द्र विद्यार्थी, विष्णुदेव प्रसाद सजल, डॉ० भरत सिंह आउ श्री मिथिलेश। ई चार सदस्यीय प्रतिनिधि–मंडल सचिव आउ उपसचिव साहित्य अकादमी से मिलल। कारू गोप अप्पन सरस कविता से धरना के जीवन्त बना देलन।



14 नवम्बर 2007 ई० के 'जन्तर मंतर दिल्ली में धरना देवे लागी श्री विष्णुदेव प्रसाद 'सजल', श्री मिथिलेश आउ डॉ० भरत सिंह के सरगनइ में इक्कावन गो साहित्यकार, कलाकर के जत्था गेल। जन्तर मंतर पर दिनभर धरना पड़ल। एहमें

भाग लेलन नरेन्द्र कुमार सिंह, ऋतु कुमारी, गोपाल निर्दोष, अशोक समदर्शी, आनन्द वर्धन, कारूगोप, रामचन्द्र, परमेश्वरी, सुधीर, धर्मेन्द्र, कृष्ण कुमार भट्टा, जइसन प्रमुख साहित्यकार के नाम जादे इयाद रखे जुकुत हे।

1.2.1997 के विधान पार्षद डॉ० नवल किशोर यादव, सहित दर्जन भर सिच्छक नेता मैथिली, भोजपुरी के संविधान के अठवाँ सूची में सामिल करे ला राज्य सरकार के सिफारिस के स्वागत करइत मगही के भी संवैधानिक अधिकार दिलावे ला मांग कयलन। प्रो० ठाकुर अवनीन्द्र सिंह, प्रो० हृदय नारायण सिंह के मिललजुलल बेयान भी अखबार में छपल। दिनांक 9.2.97 के मिथिला जन विकास परिसद के नवेन्दु कुमार झा भी संविधान में मगही के दर्जा देवे ला पुरजोर वकालत करइत अखवार में बयान देलन। युवा जागरन मंच के अरुण कुमार 'गौतम' जनवादी लेखक संघ के हरीन्द्र विद्यार्थी, चन्द्र प्रकाश माया, घमंडीराम, डॉ० सत्येन्द्र कुमार सिंह आन्दोलन के तेज कयलन। नुक्कड़ सभा के आयोजन लारी में भेल तुलसी जयन्ती समारोह के औसर पर। एहमें अरविन्द्र कुमार ऑजांस, डॉ० भरत सिंह, मनोज कुमार 'कमल' मगही भासा के रच्छा ला सूतल मगहियन के जगावे पर बल देलन।

23-10-1999 ई० के दिन पटना जंक्सन स्थित नेहरू गोलम्बर पर धरना देल गेल। एहमें घमंडी राम, डॉ० सत्येन्द्र कुमार सिंह, हरीन्द्र विद्यार्थी, विश्वजीत कुमार अलवेला, विजय गुंजन, अरुण कुमार गौतम, राजकुमार प्रेमी, चन्द्र प्रकाश माया ओगैरह सामिल भेलन। दिनांक 3.8.2001 ई० के मगही अकादमी, पटना के बइठक भेल। अध्यच्छता कयलन डॉ० रामप्रसाद सिंह। ई बइठकी मगही साहित्य के परकासन आउ मगही कार्यक्रम के आयोजन ला निदेशक राजु कुमार विद्यार्थी सरकार से आवांटित रशि बढ़ावे ला मांग कयलन। **15.1.2004** ई० आयकर गोलम्बर, पटना में धरना पड़ल। धरना के संवोधित कयलन डॉ० रामनन्दन, हरीन्द्र विद्यार्थी, घमंडी राम, डॉ० सत्येन्द्र कुमार सिंह, डॉ० अभिमन्यु मौर्य, डॉ० वी. एस. लाल, वेवस बिहारी, प्रभात वर्मा, डॉ० कुमार इन्द्रदेव, रामरतन प्र० सिंह रत्नाकर, तौहिद अख्तर, शेखर, चन्द्रप्रकाश माया, अरविन्द्र कुमार आजाँस, प्रो० रामबुझावन सिंह, मुन्ना प्रसाद, ललन मिश्र 'मुक्त', राजकुमार प्रेमी ओगैरह

19.5.2008 पटना वि० वि० कार्यालय के गेट पर पटना वि० वि० में मगही

पढ़ाई सुरू करेला धरना देवल गेल। धरना में घमंडी राम, हरीन्द्र विद्यार्थी, अभिमन्यु प्रसाद मौर्य, प्रभात वर्मा, प्रो० भरत सिंह, राकेश प्रियदर्शी, चंद्र प्रकाश माया, अरविन्द कुमार, मुन्ना प्रसाद आदि भाग लेलन। धरना पर होल सभा के अध्यच्छता हरीन्द्र विद्यार्थी आउ संचालन धमंडी राम कइलन। अंत में घमंडी राम, हरीन्द्र विद्यार्थी के दो सदस्यीय प्रतिनिधि मंडल कुलपति डॉ० श्याम लाल से मिलल। कुलपति प्रक्रिया के तहत उचित कार्रवाई करे के आस्वासन देलन।

अभ्यास के सवाल :

1. मगही के आंदोलन पर संच्छेप में एगो निबंध लिखऽ।
2. मगही आंदोलन में किनकर-किनकर महत्वपूर्ण भूमिका रहल ?

●●●